।। ओ३म् ।।

www.aryawartkesari.com

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में प्राच्य वैदिक संस्कृति तथा भारतीयता का उद्घोषक पाक्षिक

आर.एन.आई.सं.
UPHIN/2002/7589
डाक पंजी. सं.
UPMRD Dn-64/2024-26

दयानन्दाब्दः 199
मानव सृष्टि सं. : 1960853124
सृष्टि सं.: 1972949124

ARYAWART KESARI
Amroha U.P.-244221 India

संरक्षक सहयोग : रू. 5100/— आजीवन : रू.1100/— वार्षिक शुल्क : रू.100/— (विदेश में) 5 वर्ष के लिए 35 डॉलर

वर्ष-23 अंक-02 चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टमी संवत से बैशाख कृष्ण षष्ठी संवत 2081 विक्रमी 16 से 30 अप्रैल 2024 अमरोहा (उ.प्र.) मूल्य : प्रति -5/-

आर्य समाज गांधी नगर का 73वाँ वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास से सम्पन्न

यज्ञोपवीत के त्रिसूत्र ऋषि,देव और पितृ ऋणों के प्रतीक- स्वामी आर्यवेश

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि हमारा लक्ष्य- वेद व्यास

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

गाजियाबाद। आर्य समाज मंदिर,पुराना गांधी नगर का 73वाँ त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव एवं बैसाखी पर्व हर्षोल्लास से संपन्न हुआ।पूज्य स्वामी आर्यवेश जी के ब्रह्मत्व में महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसके मुख्य यज्ञमान श्रीमती एवं श्री अनूप भगत रहे।उन्होंने यज्ञ की महत्ता पर विस्तृत चर्चा की ओर लगभग 100 युवकों एवं युवतियों को यज्ञोपवीत धारण कराए और कहा कि यज्ञोपवीत ज्ञान ग्रहण करने का बाह्य चिह्न है।आज इस बात का संकल्प करना चाहिए कि वे अज्ञान, अंधकार से बाहर निकलेंगे और और ज्ञानवान होकर परिवार, समाज,राष्ट्र को प्रकाशित करेंगे एवं अपने जीवन में स्वाध्याय और यज्ञ को कभी नहीं छोडेंगे।विशेष कर यज्ञोपवीत में तीन धागे होते है वे तीन ऋणों के प्रतीक हैं।ऋषि ऋण,देव ऋण,पितृ ऋण।मनुष्य को इन तीनों ऋणों का बोध हो हमारा यज्ञोपवीत धारण कराने यही उद्देश्य है।

महामंत्री वेद व्यास ने कहा कि अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि हमारा लक्ष्य को मध्यनजर रखते हुए उन्होंने बताया कि हमारे यहां प्रतिदिन प्रातः 6 बजे से निःशुल्क योग कक्षा योग शिक्षिका अल्का बाठला के सानिध्य में शुरू होती है।प्रातः 8:30 दैनिक यज्ञ होता है। 11 से 12 बजे तक कंप्यूटर ट्रेनिंग टैली प्रोफेशनल कोर्स जिसमें 3 महीने में बच्चा अकाउंट का मास्टर बन जाता है और रोजगार प्राप्त करता है।सायं 3 से 7 बजे तक विभिन्न कक्षाएं जिसमें निर्धन बच्चों को पढ़ाई-लिखाई,इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स एवं वीना भार्गव के सानिध्य में सिलाई सिखाई जाती है, सीखने के पश्चात छात्रा/महिला को उपहार स्वरूप सिलाई मशीन दी जाती है जिससे वह आत्म निर्भर हो सकें। समारोह में बजुर्ग महिलाओं, होनहार युवक और युवतियों को स्वामी आर्यवेश एवं वेद व्यास ने प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया।

मधुर भजन-नरेश चन्द्र,दीना नाथ नागिया,महाशय सुरेन्द्र,प्रवीण आर्य,श्रीमती अंशू मेहता आदि ने ईशभक्ति एवं देशभक्ति गीत सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। समारोह में आर्य समाज में कंप्यूटर,सिलाई विद्या अर्जन कर रहे छात्र छात्राओं का सामूहिक देशभक्ति गीतों पर नृत्य, स्वगतगान तथा सांकृतिक कार्यक्रम आकर्षण का केंद्र रहे।

इस समारोह में स्वामी सुर्यवेश डा आरके आर्य,राजेन्द्र आर्य, प्रवीण आर्य ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर मुख्य रूप से स्वामी सूर्यवेश,तिलक राज सलूजा,वेद प्रकाश वोहरा,प्रवीण आर्य,सुषमा -संजीव अबरोल, नरेन्द्र आर्य,डा प्रमोद सक्सेना, देवेंद्र महत्ता आदि श्रद्धालुओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया। शांतिपाठ एवं प्रीतिभोज के साथ समारोह संपन्न हुआ।

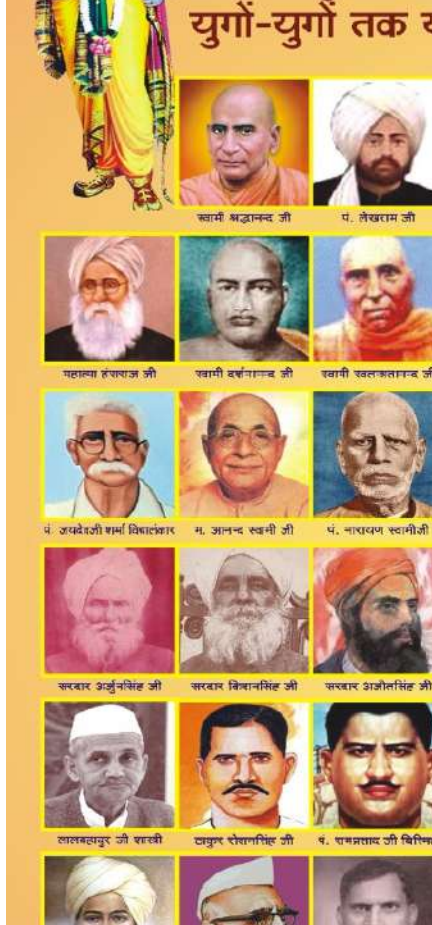

देश विदेश के सभी सम्मानित पाठकों, विद्वानों, लेखकों तथा विज्ञापनदाताओं को आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं! -

डॉ. अशोक कुमार आर्य,

संपादक

विश्वभर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक समाचार-पत्र

आर्यावर्त केसरी

पाठक संख्या
100000
एक लाख

विज्ञापन एवं आलेख प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें-

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक

निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
मोबा : 8630822099, 09412139333
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

सम्पादकीय

वेद पढ़ने का अधिकार सबको है

सामाजिक बुराई का पुरजोर विरोध करने और साफगोई की वजह से दयानंद सरस्वती कई लोगों के निशाने पर आ गए उनके कई विरोधी बने. तत्कालीन वायसराय ने जब उनसे ब्रिटिश साम्राज्य की उन्नति के लिए प्रार्थना करने को कहा तो उन्होंने साफ कहा कि मैं तो हमेशा ब्रिटिश साम्राज्य के शीघ्र समाप्ति की कामना किया करता हूं.

इसी वजह से उनकी हत्या और अपमान के लगभग 44 कोशिशें हुई. अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग तरीकों से 17 बार उन्हें जहर देकर मारने की कोशिशें की गईं, लेकिन उन्होंने कभी किसी को सजा देना या दिलवाना सही नहीं समझा. जब उनके अनुयायियों ने उनसे कहा कि आप ऐसा न कहें जिससे कि बड़े-बड़े आफिसर नाराज हो जाएं. इसके जवाब में महर्षि दयानन्द ने कहा, चाहे मेरी अंगुली की बाती बनाकर ही क्यों न जला दी जाएं मैं तो केवल सत्य ही कहूंगा.

कई राजाओं ने दयानंद सरस्वती को जमीन देने की, मन्दिरों की गद्दी देने की पेशकश की, लेकिन उन्होंने कभी उसे नहीं लिया. 1857 के स्वतंत्रता संग्राम से वो लगातार देश को आजादी दिलाने की कोशिशों में लगे रहे. अपने शिष्यों को प्रेरित करते रहे. श्यामजी कृष्ण वर्मा, सरदार भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह, स्वामी श्रद्धानन्द लाला लाजपत राय जैसे महान बलिदानी और देशभक्त उन्हीं की प्रेरणा पर देश पर जान देने को उतावले हो उठे.

वो अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए देश के युवाओं को जर्मनी भेजने को लेकर खासे उत्सुक रहे थे. केशवचन्द्र सेन, गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर के पिता, महादेव गोविन्द रानाडे, पण्डिता रमाबाई, महात्मा ज्योतिबा फुले, एनी बेसेंट, मैडम ब्लेटवस्की के साथ बातचीत कर उन्हें सत्य की एक राह पर चलने के लिए राजी करने की कोशिशें की. मार्ग पर सहमत करने का प्रयास किया. मानव की उन्नति के लिए उन्होंने 16 संस्कारों पर विस्तार से लिखा. उन्होंने लोकतंत्र, योग, पर्यावरण सब पर अपनी बात रखी.

6 फुट 9 इंच के ऊंचे कद वाले गौर वर्णधारी ब्रह्मचर्य के स्वामी योगी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हर व्यक्ति उन्नति के लिए शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को जरूरी बताया था. 59 साल में 1883 में जोधपुर में जहर दिया गया था. जिस जहर से वो अपने शरीर को नहीं बचा सकें उन्होंने उस जहर देने वाले को सजा से बचाया. दरअसल वो जोधपुर नरेश महाराज जसवंत सिंह के बुलावे पर जोधपुर गए थे. वहां महलों में जाने पर उन्होंने देखा नन्हीं नामक की एक वेश्या अनावश्यक हस्तक्षेप और महाराज जसवंत सिंह पर बेहद असर था.

स्वामी जी ने महाराज को समझाया और उन्होंने नन्हीं से रिश्ते तोड़ दिए. इससे नाराज नन्हीं ने स्वामी जी के रसोइए कलिया उर्फ जगन्नाथ अपने साथ मिलाया और उनके दूध में पिसा हुआ कांच मिलवा दिया. सोइए कलिया ने कुछ देर बाद स्वामी दयानंद के पास आकर अपना अपराध स्वीकारा और क्षमा मांगी. दयालु स्वामी ने उसे राह-खर्च ही नहीं दिया बल्कि जीवन जीने के लिए 500 रुपए देकर विदा किया ताकि पुलिस उसे परेशान न करें.

कहा जाता है कि स्वामी जी को जोधपुर के अस्पताल में भर्ती करवाया गया तो अंग्रेज सरकार के कहने पर वहां का डॉक्टर भी उन्हें जहर देता रहा था. तबियत बेहद खराब होने पर उन्हें अजमेर के अस्पताल में लाया गया, लेकिन तब -तक बहुत देर हो गई थी. आखिरकार जहर के असर से 30 अक्टूबर 1883 में अजमेर में उनकी मौत हो गई.आज उनके बनाए आर्य समाज के दुनिया के 30 देशों और भारत के सभी राज्यों में 10000 से अधिक इकाइयां काम कर रही हैं.

यज्ञ एवं दान आदि से जीवन पवित्र करने वाले तपोवन आश्रम के कीर्तिशेष प्रधान दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी

आर्यावर्त केसरी समाचार

देश में ऋषि दयानन्द के अनेक अनुयायी हुए हैं जिन्होंने अपने जीवन एवं कार्यों से अनेक आदर्श प्रस्तुत किये हैं। वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून सहित आर्यजगत की अनेक संस्थाओं में अधिकारी रहकर अपने दान आदि सत्कर्मों से अनेक संस्थाओं व गुरुकुलो आदि का पोषण करने वाले कीर्तिशेष दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी का जीवन आदर्श एवं अनुकरणीय कार्यों का जीवन्त उदाहरण रहा है। वह ऐसे ऋषिभक्त तथा वैदिक धर्म प्रेमी सत्पुरुष हुए हैं जिन्होंने अपने जीवन में प्रतिदिन देवयज्ञ का अनुष्ठान करके एक आदर्श उपस्थित किया था। श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी का जन्म अविभाजित भारत के पाकिस्तान बने भाग में हुआ था। वहां उनके माता, पिता श्रीमती शान्ति देवी जी और श्री गणेशदास अग्निहोत्री जी ऋषिभक्त महात्मा प्रभु आश्रित जी के सम्पर्क आये थे। उनकी प्रेरणा एवं संगति से उन्होंने दैनिक यज्ञ को अपनाया था। दैनिक यज्ञ उनके जीवन का अनिवार्य कार्य होता था। उनके परिवार में यज्ञ की अग्नि कभी बुझी नहीं। सन् 1947 में देश का विभाजन होने पर वह अपने माता-पिता एवं संबंधियों सहित भारत आये थे। वह जिस विमान से पाकिस्तान से भारत आये थे उसमें यज्ञकुण्ड व यज्ञ की अग्नि भी साथ लाये थे। पाकिस्तान में वह अपनी समस्त भौतिक धन-सम्पत्ति छोड़कर आये और अपने साथ केवल यज्ञकुण्ड व यज्ञ अग्नि लेकर ही आये जिसे उन्होंने वर्तमान समय तक प्रदीप्त रखा है। यज्ञ अग्निहोत्र के प्रति ऐसी श्रद्धा का उदाहरण मिलना कठिन है। सन् 1947 के बाद भी एवं यज्ञ उनके परिवार में प्रातः व सायं दोनों समय होता रहा। उन्होंने अपने गृह पर यज्ञ की अग्नि को कभी बुझने नहीं दी। आर्यसमाज में ऐसा उदाहरण अन्य किसी गृहस्थ का हमें सुनने को नहीं मिलता। ऐसा होना तो वैदिक युग में ही सम्भव लगता है। अतः जीवन भर यशस्वी दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी ने यज्ञ की अग्नि को जलाये रखकर धार्मिक एवं आध्यात्मिक जगत में एक महनीय उदाहरण प्रस्तुत किया। दोनों समय यज्ञ करने के साथ आपने एक सफल व्यवसायी व फर्नीचर उद्योग का भी संचालन कर उसमें धन एवं नाम कमाया था और अपना अर्जित सभी धन यज्ञ, वेद प्रचार, गुरुकुलों की सहायता, विद्वानों को दक्षिणा, परोपकार के अनेकानेक कार्यों सहित आर्य संस्थाओं को प्रभूत दान आदि धर्म कार्यों में व्यय किया था। वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून तथा वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक आपकी तपस्थलियां एवं स्मारक हैं जहां आपके मार्गदर्शन में वेद प्रचार एवं मानव निर्माण के अनेक कार्य हुए हैं तथा वर्तमान में भी ये दोनों संस्थायें उन्नति कर रही हैं। हम आशा करते हैं कि आगामी दीर्घ काल तक यह दोनों संस्थायें आपके मित्रों एवं सहयोगियों द्वारा पूर्ववत क्रियाशील रहेंगी और सामाजिक उन्नति के अपने दायित्वों को पूरा करती रहेंगी।

यशस्वी दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी वैदिक साधन आश्रम तपोवन के प्रधान रहे। वह अपने माता, पिता के साथ सन् 1950 से बचपन व अपनी किशोरावस्था से ही इस आश्रम में आया करते थे और यहां रहकर विद्वानों व तपस्वी साधकों से प्रेरणायें व आशीर्वाद प्राप्त किया करते थे। आपके कुलगुरु व कुलपुरोहित महात्मा प्रभु आश्रित जी ने भी यहां रहकर तप किया था और योग की प्रमुख सिद्धि आत्म एवं ईश्वर साक्षात्कार को प्राप्त किया था जिसका उल्लेख उन्होंने स्वयं अपने एक पत्र में किया जो उन्होंने तपोवन आश्रम के एक सहसंस्थापक महात्मा आनन्द स्वामी जी को यहां रहकर साधना करने के बाद लिखा था। किसी व्यक्ति व परिवार को एक सद्गुरु का उपदेश, सत्संग, संगति व सान्निध्य मिलना सौभाग्य की बात होती है। अग्निहोत्री परिवार को यह लाभ महात्मा प्रभु आश्रित जी के सत्संग एवं सान्निध्य से सुलभ रहा। अग्निहोत्री जी ने अपने माता-पिता की परम्परा को अपने जीवन में जारी रखने के साथ उसे जारी रखा और बढ़ाया भी। वह अपनी धर्मपत्नी कीर्तिशेष माता सरोज अग्निहोत्री जी के साथ मिलकर महात्मा प्रभु आश्रित जी की आज्ञाओं व शिक्षाओं का जीवन भर पालन करते रहे। देहरादून में जो वृहद एवं सुन्दर सभागार भवन बनाया गया है उसका नाम भी महात्मा प्रभु आश्रित भवन ही रखा गया है। अग्निहोत्री जी सन् 2008 में वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून सोसायटी के प्रधान बने थे। आपके प्रधान बनने के बाद वैदिक साधन आश्रम तपोवन ने अपने उद्देश्यानुसर कार्य करते हुए उन्नति करने के साथ इस संस्था के यश एवं कीर्ति में उल्लेखनीय अभिवृद्धि की है।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन में वर्ष में दो बार पांच दिवसीय शरदुत्सव एवं ग्रीष्मोत्सव आयोजित किये जाते रहे हैं। आर्यसमाज के उच्च कोटि के विद्वान एवं भजनोपदेशक इन उत्सवों में पधारते रहे हैं। इस अवसर पर किसी एक वेद से वेद पारायण यज्ञ भी आयोजित किया जाता था। आश्रम के उत्सवों पर अनेक कुण्डों में यज्ञ किये जाते थे। हमें भी सन् 1975 से कुछ वर्ष पूर्व से ही यहां जाने व उत्सवों में भाग लेने का अवसर मिला है। हमने आश्रम के जो कार्य लगभग 4050 वर्ष यहां देखे हैं वही सब कार्य भी वर्तमान में यहां होते रहे हैं। अग्निहोत्री जी के कार्यकल में आश्रम ने प्रशंसनीय उन्नति की थी। यहां आश्रम का नया सभागार एवं कार्यालय बनाया गया था। एक वृहद चिकित्सालय भवन भी बनाया गया है। अग्निहोत्री जी के दान से यहां अनेक कुटियायें बनी हैं और सभागार सहित पुरानी यज्ञशाला के जीर्णोद्धार एवं अन्य भव्य भवनों में भी आपका मार्गदर्शन एवं प्रभूत आर्थिक सहयोग रहा है। आश्रम की प्रमुख इकाई की ही भांति पर्वतीय इकाई तपोभूमि में भी वृहद एवं भव्य यज्ञशाला सहित एक सभागार एवं अनेक कुटियों का निर्माण हुआ है। यह स्थान महात्मा आनन्द स्वामी जी सहित अनेक प्रसिद्ध योगियों की साधना वा उपासना स्थली रहा है। आश्रम की इस ईकाई में यह सब कार्य जहां अग्निहोत्री जी की प्रेरणा से सम्पन्न हुए वहीं इसमें आश्रम के मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी का भी महान तप एवं पुरुषार्थ लगा है। स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी और आचार्य आशीष दर्शनाचार्य जी भी तपोवन आश्रम की शोभा व प्राण रहे हैं। स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने आश्रम का अर्थदान सहित अपने तप, वेद पारायण यज्ञों सहित उपदेशों आदि से पोषण किया है। उनके द्वारा यहां प्रतिवर्ष चतुर्वेद पारायण यज्ञ कराये जाते रहे हैं। आचार्य आशीष जी भी समय समय पर वर्ष में कई बार यहां युवकों के लिए चरित्र निर्माण एवं जीवन निर्माण के शिविर लगाते रहे हैं।

हमने इन सब विद्वानों को इस आश्रम में देखा व इनके उपदेशों को सुना है। यह हमारा सौभाग्य रहा है। इन सब प्रमुख महानुभावों के सत्प्रयासों से, वर्तमान की विषम परिस्थितियों में, आश्रम निरन्तर उन्नति करता आ रहा है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में आश्रम पूर्व की ही भांति उन्नति करता रहेगा और इस आश्रम में अग्निहोत्री जी की स्मृति सदा बनी रहेगी। हम इस बात से भी अवगत है कि अग्निहोत्री जी जब दिल्ली से आश्रम आते थे तो यहां आश्रम द्वारा संचालित तपोवन विद्या निकेतन की शिक्षिकाओं के लिये साड़ियां आदि सामान लाया करते थे और उन्हें अपनी ओर से भी कुछ धनराशि आदि का सहयोग करते थे। पढ़ाई में अग्रणीय व निर्धन तपोवन विद्या निकेतन के बच्चों को छात्रवृत्तियां व प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार राशि से भी सम्मानित करते थे। उत्सवों के अवसरों पर आश्रम में पधारे सभी विद्वानों व भजनोपदेशकों आदि का प्रातराश आपकी ही कुटियां वा निवास में होता है। अनेक अवसरों पर हम भी इसमें सम्मिलित हुए हैं। हमें आगरा के एक विद्वान श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, जो प्रायः प्रत्येक उत्सव में यहां आते रहे हैं, बताया कि प्रातराश कराने के अतिरिक्त अग्निहोत्री जी अपनी ओर से विद्वानों को दक्षिणा भी प्रदान किया करते थे। आपने एक ह्यअग्निहोत्री धर्मार्थ न्यासह्न बनाया हुआ था जिसकी ओर से तपोवन में आयोजित उत्सवों में आर्यजगत के विद्वानों व उत्तम सेवा कार्य कार्य करने वाले विद्वानों आदि को ग्यारह हजार रुपये की धनराशि एवं शाल तथा सम्मान पत्र भेंट कर सम्मान किया जाता था। एक बार वर्ष 2018 में एक साथ अनेक विद्वानों का सम्मान किया गया था जिसमें से एक विद्वान उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध वयोवृद्ध वैदिक विद्वान डा. जयदत्त उप्रेती जी थे। कई वर्ष पूर्व हमारा भी सम्मान किया गया था जिसके लिए हम अग्निहोत्री जी व उनके न्यास के सदैव ऋणी है। महात्माओं वाले अनेक गुणों से युक्त अग्निहोत्री जी को हम श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं। ईश्वर उनको उत्तम गति प्रदान करेंगे, इसका हमें पूर्ण विश्वास है।

अग्निहोत्री जी आर्यजगत की अनेक संस्थाओं का पोषण करते थे। इन संस्थाओं में एक संस्था वैदिक भक्ति साधन आश्रम, सुन्दरपुर, रोहतक भी है। इस संस्था की सभी गतिविधियों में अग्निहोत्री जी का प्रमुख योगदान होता था और आर्थिक दृष्टि से भी आप इसमें प्रभूत सहयोग करते थे। पूर्व के वर्षो में आप इसके प्रधान भी रहे। आपने यहां से महात्मा प्रभु आश्रित जी के प्रायः सभी ग्रन्थों का भव्य प्रकाशन कराया। वर्तमान समय में महात्मा प्रभु आश्रित जी के लगभग सभी ग्रन्थ यहां से सुलभ होते हैं जिसमें आपका बहुत बड़ा योगदान है। हम आशा करते हैं कि यह आश्रम निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहेगा और यहां पर अग्निहोत्री जी के जन्म दिवस पर विशेष यज्ञ यथा वेद पारायण यज्ञ आदि करके एक संक्षिप्त उत्सव किया जाया करेगा जिसमें आश्रम प्रेमी व वैदिक धर्मी लोग भाग लेकर अग्निहोत्री जी व उनकी धर्मपत्नी माता श्रीमती सरोज अग्निहोत्री (मृत्यु दिनांक 24-11-2018) को इस आश्रम की उन्नति में किये गये उनके योगदान को स्मरण कर उनसे प्रेरणा ग्रहण करने सहित उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित किया करेंगे।

हमने अनेक अवसरों पर श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी को वैदिक साधन आश्रम तपोवन में यज्ञ में सपत्नीक यजमान के आसन पर बैठकर श्रद्धापूर्वक यज्ञ करते देखा है। एक अवसर पर गुरुकुल पौंधा-देहरादून में भी चारों वेदों के शतकों से यज्ञ कराया था। उसका मनोरम दृश्य भी हमारी आंखों में उपस्थित हो रहा है। गुरुकुलों का उन्होंने पूरी सामर्थ्य से पोषण किया। वैदिक मान्यता है कि हम अपने वर्तमान जन्म में वेद विद्या के प्रचार प्रसार व सुपात्रों को जो दान देते हैं वह हमें परजन्म में प्राप्त होता है। अग्निहोत्री जी व उनके परिवार ने जीवन भर यज्ञों के आयोजन तथा दान आदि पुण्य कार्यों से वेद व आर्य संस्थाओं सहित गुरुकुलों का जो पोषण किया है उससे वह निश्चय ही परलोक में उत्तम गति के अधिकारी बने हैं। अग्निहोत्री जी का देहावसान दिनांक 16 मई, 2021 की प्रातः 2.00 बजे नोएडा-दिल्ली के कैलाश अस्पताल में कोरोना रोग से हुआ। उनकी आयु 78 वर्ष की थी। हम अग्निहोत्री जी की आत्मा की उत्तम गति व सुख शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। हमने अपने एक पूर्व लेख में अग्निहोत्री जी से संबंधित कुछ पंक्तियां लिखीं थी। उसे यहां प्रस्तुत कर लेख को विराम देते हैं।

महात्मा प्रभु आश्रित जी के जीवन व व्यक्तित्व के बारे में हमारे एक मित्र स्वर्गीय श्री वेद प्रकाश जी, देहरादून हमें बताया करते थे कि एक दम्पत्ति श्री गणेश दास कुकरेजा और उनकी देवी श्रीमति शान्ति देवी महात्मा जी पाकिस्तान में महात्मा जी के सम्पर्क में आये व उनके भक्त वा शिष्य बने। महात्मा जी द्वारा दैनिक यज्ञ की प्रेरणा किए जाने पर उन्होंने कहा कि हमारी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि हम यज्ञ की सामग्री आदि पदार्थ खरीद सकें। महात्मा जी ने प्रेरणा की कि आप प्रयास करें, प्रभु सब प्रबन्ध कर देंगें। श्री गणेश दास जी ने प्रयास किया और लाहौर में 13 जनवरी, 1939 से दैनिक यज्ञ करना आरम्भ कर दिया। इसके बाद आप मृत्युपर्यन्त यज्ञ करते रहे जिसका निर्वहन उनके सुयोग्य पुत्र श्री दर्शनलाल अग्निहोत्री जीवनपर्यन्त करते रहे। यह भी उल्लेखनीय है कि आपके यहां 13 जनवरी, 1939 मकर संक्रान्ति के दिन यज्ञ की जो अग्नि महात्मा जी की प्रेरणा से प्रज्जवलित हुई थी वह श्रद्धेय दर्शनकुमार अग्निहात्री जी सम्पूर्ण जीवनकाल पर्यन्त निरन्तर प्रज्जवलित रही। आपके परिवार ने उसे बुझने नहीं दिया। श्री गणेश दास कुकरेजा आर्यसमाज में श्री गणेशदास अग्निहोत्री के नाम से प्रसिद्ध हुए। आपने सभी धार्मिक संस्थाओं को दिल खोलकर दान किया। यह मुख्य बात बताना भी उपयोगी होगा कि जब श्री गणेशदास जी ने यज्ञ आरम्भ किया तो आपके पास यज्ञ करने के लिए धन नहीं था। कुछ ही समय बाद आप फर्नीचर के उद्योग से जुड़कर उद्योगपति बने और अथार्भाव हमेशा के लिए दूर हो गया। आर्यजगत के विद्वान आचार्य उमेशचन्द कुलश्रेष्ठ कहते हैं कि यज्ञ करने वाला अभावों से मुक्त तथा आर्थिक रूप से समृद्ध होता है और उसकी वंशवृद्धि चलती रहती है, उसका वंशच्छेद नहीं होता। एक वार्तालाप में श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी ने हमें बताया कि अगस्त 1947 में पाकिस्तान बनने पर वहां से लोग अपनी बहुमूल्य वस्तुएं लेकर आये थे परन्तु हमारे माता-पिता सब कुछ वहीं छोड़कर केवल यज्ञकुण्ड व उसकी अग्नि को सुरक्षित भारत लाये थे जो अग्निहोत्री जी के अन्तिम समय तक दिल्ली में उनके निवास स्थान पर प्रज्जवलित रही। हमें लगता है कि श्री गणेशदास अग्निहोत्री जी तथा उनके पुत्र स्व. दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी ने जो आत्मिक एवं भौतिक उन्नति की उसमें उनके यज्ञमय जीवन एवं पुरुषार्थ का ही प्रमुख योगदान था।

-मनमोहन कुमार आर्य

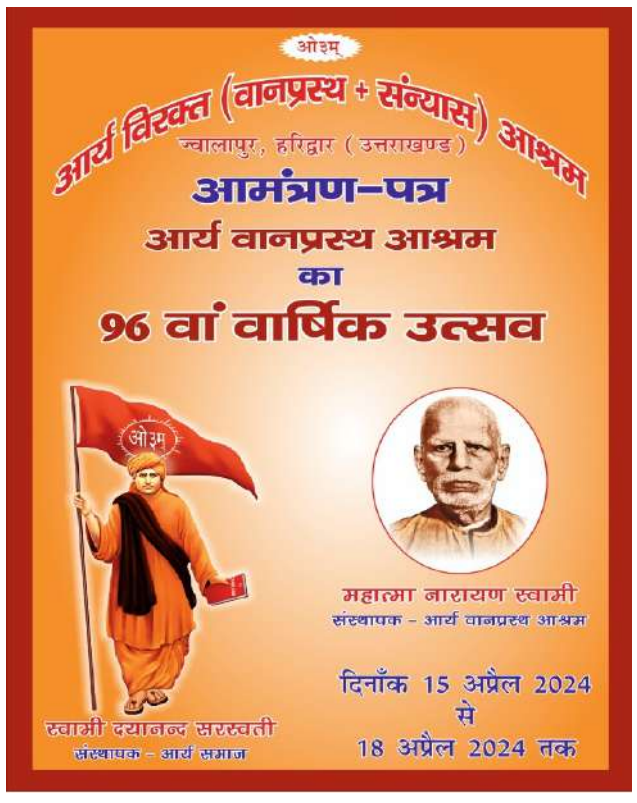

विश्व को दिशा दी वेदों और भारत की कालगणना ने : डॉ. अशोक आर्य

आर्यसमाज अमरोहा के तत्वावधान में आर्यसमाज स्थापना दिवस और नवसंवत्सर उत्सव आयोजित

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

अमरोहा। आर्य विद्वान और केपी पीजी कॉलेज कासगंज के प्राचार्य डॉ. अशोक आर्य ने कहा कि वेदों और भारत की कालगणना ने विश्व को दिशा दी।

यह विचार उन्होंने बतौर मुख्य अतिथि 9 अप्रैल को आर्यसमाज अमरोहा के तत्वावधान में धूमधाम से आयोजित आर्यसमाज स्थापना दिवस और नवसंवत्सर उत्सव में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि भारत की कालगणना सदियों पुरानी है जबकि अंग्रेजी काल गणना 2024 वर्ष में है। उन्होंने कालगणना का विस्तार से विवेचन प्रस्तुत करते हुए अंग्रेजी महीनों के नाम पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से साक्षात्कार कराया।

नारी हर कदम पर किस तरह पूजनीय

आर्य समाज के विरजानंद सभागार में उत्सव का शुभारंभ समाजसेवी अनिल जग्गा ने भजन से किया। इस अवसर पर आर्य समाज की जिला इकाई के जिला मंत्री विनय त्यागी ने नवरात्रों पर दुर्गा के नौ स्वरूपों की व्याख्या की। उन्होंने एक बालिका के दादी मां बनने तक के सफर को समझाते हुए बताया कि नारी हर कदम पर किस तरह पूजनीय है।

शत-प्रतिशत मतदान की अपील

ऊषा आर्य व प्रवीण आर्य ने महर्षि दयानंद के योगदान पर चर्चा की। डॉ.बीना रुस्तगी, यशवंत सिंह, मधु रस्तोगी व सुमन अरोरा ने भजन प्रस्तुत किए। संयोजक हेतराम सागर ने महर्षि दयानंद के सिद्धांतों के अंगीकार करने पर बल दिया। सह संयोजक/स्वीप समिति जिला प्रशासन अमरोहा के सदस्य डॉ. दीपक अग्रवाल ने सभी से 26 अप्रैल को शत-प्रतिशत मतदान की अपील की।

स्त्री आर्य समाज की प्रधान श्रीमती अंजु आर्या ने रामनगर विहार कार्यक्रम में सराहनीय योगदान के लिए सुरेश विरमानी व निर्मल विरमानी और अश्वनी खुराना व मधु खुराना को सम्मानित किया। इससे पूर्व आर्य समाज की यज्ञशाला में विश्वकल्याण और सभी की खुशहाली के लिए पुरोहित आचार्य सोमेश शास्त्री से यज्ञ संपन्न कराया। यजमान प्रवीण आर्य व लीना आर्या, सुभाष दुआ व संतोष दुआ, विनय त्यागी व कमलेश त्यागी, तेजपाल आर्य व आशा आर्या रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. दीपक अग्रवाल ने किया। इस अवसर पर जिला मंत्री नत्थू सिंह, कोषाध्यक्ष अंकुर अग्रवाल, मनोहर लाल खुराना समेत बड़ी संख्या में आर्यजन मौजूद रहे।

"नववर्ष पर हमारे संकल्प" विषय पर गोष्ठी संपन्न

- नववर्ष किसी जाति, धर्म या देश का नहीं है -आचार्या श्रुति सेतिया
- आर्य समाज सुधारवादी आंदोलन है -राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

नई दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में "नववर्ष पर हमारे संकल्प " विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 632 वां वेबिनार था।

वैदिक विदुषी आचार्या श्रुति सेतिया ने कहा कि भारतीय नववर्ष हमारी संस्कृति वा सभ्यता का स्वर्णिम दिन है।यह भारतीय गरिमा में निहित अध्यात्म वा विज्ञान पर गर्व करने का अवसर है।जिस भारत भूमि पर हमारा जन्म हुआ, जहां हम रहते हैं जिससे हम जुड़े हैं उसके प्रति हमारे अंदर अपनत्व वा गर्व का भाव होना चाहिए।यह उत्सव चैत्र शुक्ल प्रथमा को मनाया जाता है।

नववर्ष किसी जाति, वर्ग, देश संप्रदाय का नहीं है, अपितु यह मानव मात्र का नववर्ष है। यह संवत मानव संवत है।हम सबको एक परमात्मा की संतान समझकर मानव मात्र से प्रेम करना सीखें।ऊंच नीच की भावना, भाषावाद, संकीर्णता आदि को पाप मानकर प्राणिमात्र के प्रति मैत्री भाव जगाए।आज वेद संवत है।हम सब अनेक मत पंथों से निकलकर सम्पूर्ण भूमंडल पर एक वेद धर्म को अपनाकर प्रभु कार्य के ही पथिक बनें।

मयार्दा पुरुषोत्तम श्री राम के विजय दिवस पर उस महापुरुष की स्मृति में उनके आदर्शों को अपनाकर ईश्वरभक्त, वेदभक्त, आर्य संस्कृति के रक्षक, गुरुभक्त, दुष्ट संहारक वीर, साहसी, आर्य पुरुष वा प्राणी मात्र के प्रिय बने।

आज राष्ट्रीय संवत पर महाराज युधिष्ठिर, विक्रमादित्य आदि की स्मृति पर अपने प्यारे आर्यवृत्त भारत देश की एकता अखंडता एवम् समृद्धि की रक्षा का व्रत लें। ईमानदारी, प्राचीन सांस्कृतिक गौरव, सत्यनिष्ठा, देशभक्ति, कर्तव्य वा वीरता का संचार करें। आर्य समाज स्थापना दिवस होने के कारण कृणवंतो विश्वमार्यम वेद के आदेशानुसार सच्चे अर्थों में आर्य बनें एवम् संसार को आर्य बनाएं।संध्या करें, घर पर ओ३म् पताका फहराएं।यज्ञ करें, बालकों को नव संवत्सर का महत्व बताएं। शोभा यात्रा निकालें, लोगों को जागरूक करें।वेद वा संस्कृत पढ़ने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि भारतीय नववर्ष मनाकर हमें इस पर गर्व करना चाहिए।आर्य समाज का 150 वां स्थापना दिवस भी है यह एक सुधार वादी आंदोलन है जो आने वाले पाखण्ड अंधविश्वास के प्रति जागरूक करता रहता है। अध्यक्ष आर्य नेत्री रजनी चुघ ने भी अपनी संस्कृति को आत्मसात करने पर बल दिया। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने गीत गाकर बधाई दी। गायिका कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, ईश्वर देवी, कमला हंस, ललिता धवन, अनिता रेलन, सुनीता अरोड़ा, कुसुम भंडारी, शोभा बत्रा आदि के मधुर भजन हुए।

ओ३म्
महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती पर अमरीका चलो
आर्य प्रतिनिधि सभा, अमरीका अमरीका चलो
द्वारा आयोजित भव्यातिभव्य
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
न्यूयार्क, दिनांक 18-19-20-21 जुलाई 2024
सम्माननीय भाईयों और बहिनो!
भारत के सैकड़ों आर्यजन इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने पहुँच रहे हैं। आप भी अपना रजिस्ट्रेशन शीघ्र ही करायें। इस अवसर पर जो यात्री अमरीका घूमना फिरना चाहते हैं उनके लिये दो प्रकार की यात्राओं का आयोजन किया गया है। ध्यान रहे कि अन्य देशों की अपेक्षा अमरीका की यात्रा महंगी रहती है क्योंकि केवल एअर टिकिट का मूल्य ही लगभग एक लाख पच्चीस हजार चल रहा है।
प्रथम टूर - 5 रात्रि 6 दिन, व्यय-राशि 2,35,000/- रुपये
17 जुलाई से 23 जुलाई (दिल्ली-अमरीका-दिल्ली)
3 रात्रि आर्य महासम्मेलन, 2 रात्रि न्यूयार्क
इस राशि में निम्नलिखित खर्च शामिल हैं
हवाई जहाज की अन्तर्राष्ट्रीय टिकिट (अनुमानित मूल्य 1,25,000/-) सभी स्थानों पर आने जाने की वाहन व्यवस्था, इन्श्योरेन्स (60 की उम्र तक), नाश्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकिट, मिनरल वाटर, टिप्स आदि) GST 5%, TCS 5%
द्वितीय टूर - 7 रात्रि 8 दिन, व्यय-राशि 2,75,000/- रुपये
15 जुलाई से 23 जुलाई (दिल्ली-अमरीका-दिल्ली)
2 रात्रि नियाग्रा, 3 रात्रि आर्य महासम्मेलन, 2 रात्रि न्यूयार्क
इस राशि में निम्न लिखित खर्च शामिल हैं
हवाई जहाज की अन्तर्राष्ट्रीय टिकिट (अनुमानित मूल्य 1,25,000/-) सभी स्थानों पर आने जाने की वाहन व्यवस्था, इन्स्योरेन्स (60 की उम्र तक), नाश्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकिट, मिनरल वाटर, टिप्स आदि) GST 5%, TCS 5%
उक्त यात्रा में जाने वाले सभी इच्छुक यात्रीगण शीघ्र ही 50,000/- (पचास हजार) का बैंक ड्राफ्ट Thomas Cook (India) Ltd. के नाम का बनवाकर निम्नलिखित पते पर भेजें।
न्यूयार्क आर्य महासम्मेलन समिति, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
टूर रजिस्ट्रेशन के लिये तथा यू.एस. वीजा के लिये कृपया
श्री संदीप आर्य से मो.नं. 9650183339 पर सम्पर्क करें
कृपया नोट करें: जो यात्री वीजा मिलने के बाद भी यदि टूर में नहीं जायेंगे उनकी 50,000/- की एडवांस राशि वापस नहीं होगी। एडवांस राशि केवल उन्हीं की वापस होगी जिन्हें यू.एस. वीजा नहीं मिलेगा।

एमिटी में लगेगा आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर

संस्कारित युवा ही राष्ट्र का भविष्य -राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

नोएडा। आर्य समाज अरुण विहार सेक्टर 29 व आर्य समाज, सेक्टर 33 नोएडा में सभा को संबोधित करते हुए केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि संस्कारित युवा ही राष्ट्र का उज्जवल भविष्य हैक आज युवाओ में देश भक्ति की भावना भरने की आवश्यकता है साथ ही वह माता पिता के आज्ञाकारी और ईश्वर भक्त भी बने, इसलिए आगामी ग्रीष्म कालीन अवकाश में "विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर" शनिवार, 1 जून से रविवार, 9 जून 2024 तक एमिटी इंटरनेशनल स्कूल सेक्टर 44, नोएडा में शिक्षाविद डॉ. अमिता चौहान व डॉ. अशोक कुमार चौहान के सानिध्य में आयोजित किया जाएगा।

परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने बताया कि कक्षा 6 से 12 वीं तक के 250 युवक शिविर में लिये जायेंगे।शिविर संरक्षक आनंद चौहान ने कहा कि प्रतिदिन उच्च कोटि के वैदिक विद्वान बौधिक प्रदान करेंगे जिससे वह अपनी पुरातन वैदिक संस्कृति से परिचित हो सकेंक राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि युवको को योगासन, दण्ड बैठक, लाठी, स्तूप, बाक्सिंग, लेजियम, जूडो कराटे आदि आत्म रक्षा शिक्षण दिया जाएगा। अमर बलिदानी महाशय राजपाल को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अनिल आर्य ने उन्हें आंतकवाद का प्रथम शिकार बताया। सभा का संचालन मेजर जनरल मुक्ति कांत महापात्र व गायत्री मीना ने किया। प्रमुख रूप से कैप्टन अशोक गुलाटी, मेजर जनरल आर के एस भाटिया, कर्नल अमरीश त्यागी, राम लुभाया महाजन, अजेंन्द्र शास्त्री, अवधेश प्रताप सिंह, रोहित कुमार सिंह आदि उपस्थित थे।

संस्कारों के साथ चलें!!
यज्ञ-हवन, गायत्री जाप, महामृत्युंजय जाप, सत्यनारायण कथा, जन्म दिवस, गृह प्रवेश वर्षगांठ, नामकरण संस्कार, अंत्येष्टि संस्कार, शांति यज्ञ, मकान, दुकान, फ्लैट, शोरूम, व्यापार वृद्धि यज्ञ, योग, प्रवचन, लगन सगाई एवं विवाह संस्कार व समस्त संस्कारों को पूर्णता वैदिक पद्धति द्वारा करवाने हेतु संपर्क करें
अपने या अपने बच्चों के जन्मदिवस और विवाह वर्षगांठ पर वेदकथा
निःशुल्क करायें
पंडित दीपक शास्त्री
दिल्ली एनसीआर नोएडा

यज्ञोपवीत संस्कार कराने बांग्लादेश जायेंगे आचार्य आनंद पुरुषार्थी

20 अप्रैल से 19 मई 2024 तक राजधानी ढाका सहित 8 नगरों में होंगे यज्ञोपदेश

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

नर्मदापुरम (मध्य प्रदेश)। आर्यसमाज की संस्था बांग्लादेश अग्निवीर के निमंत्रण पर नर्मदापुरम मध्यप्रदेश के वैदिक प्रवक्ता अपनी 18 वी विदेश यात्रा पर एक माह के लिए 19 अप्रैल 2024 को दोपहर 12:15 बजे इंडिगो की फ्लाईट से इंटरनेशनल एयरपोर्ट दिल्ली से ढाका रवाना होंगे` 19 मई तक लगभग 30 दिन आपका बांग्लादेश में प्रवास रहेगा ।बारिसल, रंगपुर, दिनाजपुर, चट्टगांव, ठाकुरगांव और पंचगढ़ जिलो मे उपनयन संस्कार है तथा गोपालगंज मे वैदिक मंदिर और पुस्तकालय उद्घाटन का कार्यक्रम हैं। इसके अतिरिक्त राजधानी ढाका मे महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती के उपलक्ष्य मे उपनयन संस्कार का बृहद् कार्यक्रम आयोजित है । जिसमे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी विशेष रूप से सम्मिलित होंगे। ध्यातव्य है आर्य समाज के वैदिक प्रवक्ता आनंद पुरुषार्थी अभी तक दुबई, मारीशस, होलेन्ड, सूरीनाम, फिजी , इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका , बर्मा , थाईलेंड, व संयुक्त राज्य अमेरिका आदि देशो में जाकर वैदिक धर्म व आर्यसमाज का प्रचार कर चुके है।

आर्य समाज ने बांधे पक्षियों के लिए परिंडे

– शहर के कई पार्कों में बांधे जाएंगे परिंडे

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

कोटा. आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के महामंत्री अरविन्द पाण्डेय ने बताया कि गर्मी के मौसम में पानी की तलाश में भटकते प्यासे पक्षियों के लिए आर्य समाज कोटा द्वारा हर वर्ष की भांति परिंडे बांटो- बांधों अभियान का प्रारंभ मंगलवार को संभागीय प्रधान अर्जुन देव चढ्डा के नेतृत्व मे किया गया। संभागीय मंत्री लाल चन्द आर्य ने बताया कि आर्य समाज के प्रतिनिधियों, अरविन्द पाण्डेय, राधावल्लभ राठौर, किशन आर्य हरियाणा, नरेन्द्र शर्मा, संगीता आर्य, विमलेश आर्य, डॉ.अल्का गुप्ता, आशा यादव, प्रमीला गुप्ता, आदि अन्य ने अर्जुन देव चढ्डा के नेतृत्व मे रंगबाडी बालाजी मन्दिर पार्क क्षेत्र में मंत्रोचार के साथ मिट्टी के परिंडे बांधे। राधावल्लभ राठौर ने बताया कि आर्य समाज द्वारा शहर के अलग-अगल पार्कों में भी परिंडे बांधे जाएगे।

संकल्प करते हैं राष्ट्र हित में मतदान अवश्य करेंगे : आचार्य संजीव रूप

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

बिल्सी। तहसील क्षेत्र के यज्ञ तीर्थ गुधनी में स्थित आर्य समाज मंदिर में विशेष सत्संग का आयोजन किया गया। यजुर्वेद के मंत्रों से आहुतियां दी गई तथा राष्ट्र कल्याण की कामना की गई। अंतर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान आचार्य संजीव रूप ने यज्ञ करते हुए यजमानों को एक संकल्प कराया कि राष्ट्र हित में शत प्रतिशत मतदान अवश्य करेंगे ।आचार्य संजीव रूप ने कहा राष्ट्र प्रथम होता है। राष्ट्र से बड़ा कुछ नहीं होता क्योंकि राष्ट्र से ही हम हैं, हमारे संस्कार हैं, हमारी संस्कृति हैं। प्रश्रय आर्य ने सुंदर भजन सुनते हुए कहा मर्यादित व्यक्ति ही सच्चा राष्ट्रभक्त होता है कुमारी तृप्ति आर्य शास्त्री भावना आर्य एवं मोना आर्य ने वेद पाठ किया। कार्यक्रम राकेश, संतोष कुमारी, सुखवीर सिंह बद्री प्रसाद आर्य, कुमारी ईशा आर्य आदि मौजूद रहे।

हरिद्वार में योग साधना शिविर संपन्न

अहंकार को त्याग कर ओंकार से जुडें–आचार्य अखिलेश्वर भारद्वाज

जातिवाद राष्ट्रीय एकता में बाधक है -राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

हरिद्वार। वैदिक योग आश्रम, आनंदधाम हरिपुर कलां, हरिद्वार में गत एक सप्ताह से चल रहे "योग साधना शिविर का भव्य समापन हो गया। शिविर में दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब आदि से लगभग 90 साधकों ने भाग लिया ।

वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी ने कहा कि मनुष्य को अहंकार को छोडकर "ओंकार" से जुड़ना चाहिए।मनुष्य को जो मिला है वह ईश्वर से मिला है फिर मानव मैं का अहंकार क्यों पाल लेता है।हमें अपना कार्य ईश्वर को समर्पित करके करना चाहिये। उन्होंने कहा की पतंजलि योग दर्शन के यम और नियम से व्यक्तिगत एवं राष्ट्र की उन्नति संभव है चारों वेदों में योग विषयक मंत्र हैं।पतंजलि महाराज ने ईश्वर सानिध्य एवं मोक्ष प्राप्ति के लिए अष्टांग योग का विवेचन किया है।यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ध्यान समाधि य? आठ अंग हैं।महर्षि पतंजलि प्रतिपादित यम और नियम साधक की मनोदशा को उन्नत बनाते हैं।अविद्या का नाश होता है।ज्ञान का प्रकाश होता है।जीवन सतोगुण प्रधान हो जाता है।उनके अनुसार अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह यह पांच यम हैं।शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान ये 5 नियम हैं।इस मार्ग पर चलकर ईश्वर साक्षात्कार एवं मोक्ष प्राप्ति संभव है।

समारोह के विशिष्ट अतिथि अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद) ने कहा कि योग शिविर आत्मिक उन्नति का उत्तम साधन है मनुष्य शांत भाव से स्वयं को समझ पाता है कि वह संसार में क्यों आया है और क्या करना है?आत्मावलोकन स्वयं को सुधारने की सुन्दर पहल है।साथ ही उन्होंने देश की वर्तमान परिस्थितियों में राष्ट्रवादी शक्तियों को मजबूत करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जातिगत जनगणना राष्ट्रीय एकता में बाधक है इससे राष्ट्र कमजोर होगा कलोगों को जातिवाद प्रांतवाद के नाम पर बांटना घातक सिद्ध होगा। आचार्य देव आर्य ने मधुर भजन सुनाए। आश्रम के संरक्षक संजीव रैली एडवोकेट ने सभी की सेवाओं के लिए आभार व्यक्त किया।

प्रमुख रूप से शिव नारायण ग्रोवर इंदिरा पुरम, सतीश ग्रोवर, कमलेश साहनी, मनीष नारंग, प्रवीण आर्य पिंकी, आस्था आर्य, पाला राम आर्य, मीना आर्य, विजय हंस, अर्जुन दास बत्रा आदि उपस्थित थे।

ओ३म्

विनम्र श्रद्धाञ्जलि

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च। (गीता- 2.27)

जो जन्मा है उसकी मृत्यु निश्चित है और जो मृत्यु को प्राप्त हो गया उसका जन्म भी निश्चित है।

कन्या गुरुकुल चोटीपुरा के सह संस्थापक एवं आचार्या सुमेधा जी के ज्येष्ठ भ्राता गुरुकुल संस्कृति के संपोषक, आर्यव्रती पूज्यश्री चेतनस्वरूप जी आर्य (79 वर्ष) के 9-4-2024 (मंगलवार) रात्रि 9:30 बजे आकस्मिक निधन पर

शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धाञ्जलि कार्यक्रम दिनांक 17-04-2024 (बुधवार)

- शान्ति यज्ञ - प्रात: 10:00 बजे
- श्रद्धाञ्जलि सभा - मध्याह्न 12:00 बजे
- प्रसाद ग्रहण - अपराह्न 1:30 बजे

गुरुकुल समिति

आचार्या डॉ. सुमेधा (मुख्याधिष्ठात्री)
राकेश जैन (अध्यक्ष)
अशोक कुमार सिंह (उपाध्यक्ष)
सुशील कुमार अग्रवाल (मंत्री)

शोकाकुल परिवार

वेद व्रत आर्य, डॉ. ज्योति (ज्येष्ठ पुत्र एवं पुत्रवधू)
आयुषी, अनन्या (पौत्री) Mob. 9810769186
संजीव कुमार, प्रवेश (कनिष्ठ पुत्र एवं पुत्रवधू) Mob. 9897630963
सुधा, वीरेन्द्र (पुत्री एवं दामाद) ऋतिका, रमन (दौहित्री, दौहित्र)
सविता, डॉ. नरेन्द्र (पुत्री एवं दामाद) वागीशा, दर्श (दौहित्री, दौहित्र)
आलोक, अदिति (पौत्र एवं पौत्रवधू) राघवी (प्रपौत्री)
अभिषेक, शिवानी (पौत्र एवं पौत्रवधू) धृति (प्रपौत्री)
प्रेरणा, विजय (पौत्री एवं दामाद)
आर्याशी, अथर्व (दौहित्री, दौहित्र)

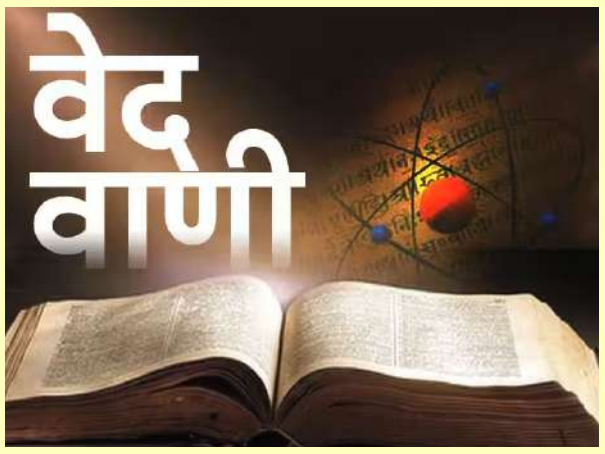

कार्यक्रम स्थल

निज निवास, कन्या गुरुकुल चोटीपुरा
पो. रजबपुर, जनपद अमरोहा

वेद वाणी

(उपहूतो द्यौष्पितोप मां द्यौष्पिता यतामग्निराग्नीघ्नात् स्वाहा! देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोबार्हुभ्यां पूर्ण हस्ताभ्याम्! प्रतिगृह्णाम्यग्नेष्ट्वास्येन प्राश्नामि!) यजु- २-११

स्वस्थ मस्तिष्क वाला व्यक्ति प्रत्येक पदार्थ का प्रयोग प्रभु के आदेशानुसार करता है, प्रयत्न पूर्वक अर्जित पदार्थ का सेवन करने की कामना करता है और वह यज्ञ शेष खाने वाला बनता है!

व्याख्या पिछले मन्त्र में पृथिवी माता के उपाह्वान के साथ समाप्त हुआ था प्रस्तुत मंत्र द्यौष्पिता के आह्वान से आरम्भ होता है! मेरे द्वारा पितृस्थानीय द्युलोक समीप पुकारा जाता है! यह द्युलोक भी मुझे अपने समीप पुकारे!

अध्यात्म में यह द्युलोक मस्तिष्क ही है, मेरा मस्तिष्क सदा स्वस्थ हो! मेरी बुद्धि मुझमें ही रहे! सूर्य रुप अग्नि के आधार स्थान इस द्युलोक में सूर्य के समान ज्ञान का प्रकाश मुझमें सुहुत हो! मेरे ज्ञान का प्रकाश सूर्य के प्रकाश के समान चमकने वाला हो!

२- स्वस्थ मस्तिष्क वाला बनकर मै त्वा सवितुः देवस्य प्रसवे प्रतिगृह्णामि

प्रत्येक पदार्थ को उस उत्पादक देव की अनुज्ञा में ग्रहण करूँ! प्रभु की आज्ञानुसार प्रत्येक पदार्थ का नाप तौल कर सेवन करूँ! मेरा प्रयोग मात्रा में हो जिससे ये पदार्थ मेरी बल बुद्धि का कारण बनें!

३- अश्विनोबार्हुभ्याम् मै प्रत्येक पदार्थ का प्राणायाम के प्रयत्न से लूं! बिना प्रयत्न से प्राप्त पदार्थ मेरे ह्रास का कारण बनेगा!

४- पूष्णो हस्ताभ्याम् मै प्रत्येक पदार्थ को पूषा के हाथों से ही लूं अर्थात पोषण के दृष्टिकोण से ही उसका प्रयोग करूँ! स्वाद या सौन्दर्य मेरे मापक न हो! उपयोगिता ही मेरी कसौटी हो!

५ - अन्तिम बात यह है कि त्वा अग्नेः आस्येन प्राश्नामि तूझे अग्नि के मुख से खाता हूँ पहले तूझे अग्नि को खिलाता हूँ फिर अवशिष्ट का ही ग्रहण करता हूँ! अर्थात मै यज्ञ शेष का ही ग्रहण करता हूँ! मन्त्र का भाव है कि-संसार के प्रत्येक पदार्थ का प्रयोग हम प्रभु के आदेशानुसार करें! हम यज्ञ शेष ही का सेवन करें

सुमन भल्ला

अप्रैल मास के द्वितिय रविवार को साप्ताहिक यज्ञ सत्संग कार्यक्रम आयोजित

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

जिला- हिसार (हरियाणा)। अप्रैल मास के द्वितिय रविवार को साप्ताहिक यज्ञ सत्संग कार्यक्रम में चि० आयुष आर्या ने यज्ञमान के आसन को सुशोभित किया व चि० निलेश आर्य व सीताराम आर्य ने पूर्ण वैदिक रीति से ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ व बलिवैश्वदेव यज्ञ सम्पन्न करवाया । सबने मिलकर यज्ञ प्रार्थना व आर्य समाज के नियम पाठ के बाद दो भजन १)" रचाया सृष्टि को जिस प्रभु ने ....." व "प्रभु सारी दूनियां से उंची तेरी शान है....." गाए । आदरणीया बहन आचार्या सुकामा जी ने कार्यक्रम की शोभा बढाई । सीताराम आर्य ने "ईश्वर का नाम और उसका अता-पता" का स्वाध्याय किया । कार्यक्रम समापन उपरान्त सबने यज्ञशेष का आनन्द लिया ।

एक शानदार जीवन यात्रा

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

हिसार। शेरे पंजाब लाला लाजपत राय द्वारा संस्थापित आर्य समाज नागोरी गेट, हिसार के सर्वाधिक लम्बे समय प्रधान रहे व हरियाणा सरकार में मन्त्री रहे ऋषि पथ के अनुगामी स्वनाम धन्य चौ० हरिसिंह सैनी अपनी जीवन यात्रा की शानदार पारी पूरी करके अनेकानेक स्मृतियों के साथ अपना भौतिक शरीर छोड़ कर हमसे जुदा हो गए । उनकी अन्त्येष्टि सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी महाराज के मार्ग निर्देशन में आचार्य डा० प्रमोद योगार्थी, आचार्य पं० कर्मवीर शास्त्री व दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के छात्रों ने ऋषिनगर शमशान भूमि में वेद मन्त्रोच्चारण के साथ हजारों नगर वासियों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न करवाई । ?स्वामी आर्यवेश जी ने दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए नगरवासियों की ओर से प्रार्थना करवाई ।

प्रथम पुण्य तिथि पर यज्ञ का आयोजन

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

हिसार। श्री पृथ्वीसिंह जाखड़, गांव- आर्यनगर, जिला- हिसार (हरियाणा) के घर पर उनकी धर्मपत्नी स्व० श्रीमती धापादेवी की प्रथम पून्य तिथि पर यज्ञ करवाते हुए श्री सीताराम आर्य यज्ञमान पुत्र एवं पुत्रवधु श्री धर्मवीर/ श्रीमती कविता देवी । इस अवसर पर सब परिवारजनों ने मिलकर एक भजन "ईश्वर तुम ही दया करो, तुम बिन हमारा कौन है.....। गाया व श्री आर्य जी ने गीता में आत्मा की अमरता के साथ स्थूल और सुक्ष्म शरीर, जीवात्मा के साथ देने वाले पून्यकर्म व पूनर्जन्म आदि विषय को लेकर बहुत सुन्दर उपदेश किया ।

कान्यांजलि

महर्षि दयानंद सरस्वती

अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाशा दयानंद ऋषि ज्ञानी ने।
पाखंडों का नाश कर दिया वेद ज्ञान के दानी ने।।
वेद शास्त्र का सार बताकर धर्म कर्म समझाया है।
निराकार ईश्वर की महिमा भक्ति भाव दिखलाया है।
सारे जग में धूम मचाई दयानंद विज्ञानी ने।।
अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाशा दयानंद ऋषि ज्ञानी ने।।
गूंज उठे आकाश पृथ्वी ऐसा बिगुल बजाया है।
मन बुद्धि रोशन करने को भगवा ध्वज फहराया है।
दूर किए पाखंड सभी उस दयानंद लासानी ने।।
अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाशा दयानंद ऋषि ज्ञान ज्ञानी ने।।
पाप पुण्य और सत्य झूठ को साफ-साफ दिखलाया है।
वैदिक दर्शन की महिमा को सर्वोपरि बतलाया है।
दिल का दर्पण साफ कर दिया दयानंद की वाणी ने।।
अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाशा दयानंद ऋषि ज्ञानी ने।।
गौरवशाली वचन ऋषि के शक्ति का संचार करें।
मुर्दे में भी जान डाल दें ऐसा गौरव गान करें।
कायाकल्प कर दिया सबका दयानंद भटमानी ने।।
अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाशा दयानंद ऋषि ज्ञानी ने।।

रचनाकार- मणि राम शर्मा 'सरल'
जनपद- बिजनौर (उ०प्र०)
मो०-९८९७९०५४७४

मंगलमय सबको नव वर्ष

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

उठें समय से बिस्तर छोड़ें।
बीमारी से नाता तोड़ें।
प्रातः काल घूमने जाएं।
दिनचर्या को स्वच्छ बनाएं।
प्राणायाम योग से नाता।
जीवन सबका स्वस्थ बनाता।
रखें स्वास्थ्य का पूरा ध्यान।
सबके प्रति मन में सम्मान।
पौष्टिक होगा जब जलपान।
देह बनेगा तब बलवान।
मादक वस्तु कभी ना खाएं।
कहीं कुसंगति में ना जाएं।
गुटखा चुटकी पान सुपारी।
छोड़ो ये सब हैं बीमारी।
सुंदर हो आचरण हमारा।
दीन दुखी का बनें सहारा।
सबसे प्यारा देश हमारा।
इसे बनाएं सबसे न्यारा।
तब हो जीवन का उत्कर्ष।
मंगल मय सबको नव वर्ष।

रचना-मणि राम शर्मा 'सरल'
बिजनौर उ०प्र०

वैदिक भजन

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

विधाता तू हमारा है,
तु ही विज्ञान दाता है,

बिना तेरी दया कोई,
नहीं आनन्द पाता है

तितिक्षा की कसौटी से,
जिसे तू जाँच लेता है,

उसी विद्याधिकारी को,
अविद्या से छुड़ाता है

सताता जो न औरों को,
न धोखा आप खाता है,

वही सद् भक्त है तेरा,
सदाचारी कहाता है

सदा जो न्याय का प्यारा,
प्रजा को दान देता है,

महाराजा !! उसी को तू,
बड़ा राजा बनाता है

तजे जो धर्म को,
धारा कुकर्मों की बहाता है,

न ऐसे नीच-पापी को,
कभी ऊँचा चढ़ाता है

स्वयम्भू "शंकरानन्दी",
तुझे जो जान लेता है,

वही कैवल्य सत्ता की,
महत्ता में समाता है

विधाता तू हमारा है,
तु ही विज्ञान दाता है,

बिना तेरी दया कोई,
नहीं आनन्द पाता है

रचनाकार :- महाकवि पण्डित श्री नाथूराम शर्मा 'शंकर'

ओ३म्

(सार्वदेशिक आर्य वीर दल की प्रान्तीय इकाई)

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश (पंजी०)

(सान्निध्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में)

चरित्र निर्माण, आत्मरक्षा एवं शाखा संचालन प्रशिक्षण शिविर

स्थान: एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग, नई दिल्ली 110026

दिनांक: बुद्धवार 22 मई से शनिवार 1 जून 2024 तक

उद्घाटन: 26 मई, रविवार सायं 5 बजे

समापन: 1 जून, शनिवार सायं 4:00 बजे

मान्यवर महोदय नमस्ते

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में आयोजित एवं आर्य समाज की स्थापना के वर्ष 2025 में 150 वर्ष पूर्ण होने के महा-पावन उपलक्ष पर, दल ने 200 शाखाओं के संचालन का संकल्प लिया है इस हेतु इस वर्ष विशेष शिविर का आयोजन किया जा रहा है

शिविरों के द्वारा युवाओं के सर्वांगीण विकास हेतु चरित्र निर्माण, शारीरिक निर्माण (PHYSICIAL FITNESS TRANING) आत्मिक व अध्यात्मिक विकास, वैदिक विचारधारा (VEDIC IDEOLOGY) आसन, प्राणायाम व ध्यान (YOG & MEDITATION), यज्ञ प्रशिक्षण, व्यक्तित्व विकास (PERSONALITY DEVELOPMENT), संवाद कौशल (SPEAKING SKILL) आत्मरक्षा व प्राथमिक कमांडो प्रशिक्षण (SELF DEFENCE), के साथ साथ राष्ट्रीयता के संस्कारों (NAITIONALISM) को देने का कार्य करता है। जिससे आपके बच्चों के जीवन को आदर्श बनाया जा सके और अपने परिवार व समाज के प्रति जिम्मेदारियों का ईमानदारी से निर्वहन कर सकें।

शिविरार्थियों हेतु निर्देश:- 1. शिविरार्थियों की आयु 12 वर्ष से अधिक हो 2. शिविर शुल्क 400- रुपये प्रति शिविरार्थी होगा एवं दो पासपोर्ट साईज फोटो साथ लाएं 3. शिविरार्थी अपने साथ कोई कीमती सामान न लाएं। जैसे- मोबाईल, घड़ी, चेन, ईयरफोन, आईपैड आदि 4. शिविरार्थी भोजन के लिए थाली, गिलास, चम्मच, कटोरी, ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लाएं 5. शिविर गणवेश- खाकी निक्कर, सफेद शैंडो बनियान, सफेद पी.टी. जूते, सफेद जुराब, लंगोट एवं टॉर्च साथ लाएं 6. सभी शिविरार्थी 22 मई मध्याह्न 3 बजे तक शिविर स्थल अवश्य पहुंचे 7. सभी शिविरार्थियों का शिविर की दिनचर्या एवं अनुशासन में रहना आवश्यक है 8. आवश्यकतानुसार यदि आप कोई विशेष दवाई लेते हैं तो साथ लावें 9. शिविरार्थि अपने साथ लाए अधिकतम रुपये शिविर बैंक में प्रथम दिवस ही जमा करावे जो कि यह जमा राशि शिविर समापन पर ही वापिस दी जाएगी।

दान दाताओं से अपील

दान हेतु आप अपनी सहयोग राशी आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के नाम नकद/चेंक/ड्राफ्ट दल के 'यूनियन बैंक खाता संख्या-520101253203127, IFSC Code: UBIN0901415 ब्रांच कनॉट प्लेस, दिल्ली' के नाम से दल के मुख्य कार्यालय आर्य समाज मिन्टो रोड, डी.डी. यू मार्ग, नई दिल्ली-2 पर प्रेक्षित कर सकते है या दल के बैंक खाते में जमा कराकर 9899008054/9990232164 पर सूचित कर रसीद अवश्य प्राप्त करें। दल को दी गई दान राशि आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत कर मुक्त है।

निवेदक

जगवीर आर्य संचालक
बृहस्पति आर्य महामन्त्री 9990232164
सुन्दर आर्य कोषाध्यक्ष 9899008054
धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
विनय आर्य महामन्त्री
सत्यानन्द आर्य संरक्षक एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग
अशोक मेहतानी आर्य समाज पंजाबी बाग
जीतेन्द्र बनाती
बृजेश आर्य अधिष्ठाता

रोहताश आर्य उपसंचालक 9891361321
वीरेश आर्य उपसंचालक 9868776103
पवन आर्य उपसंचालक 9911689450
वाचस्पति शास्त्री उपसंचालक 9999490098
संजय आर्य उपसंचालक 9212323255
सोनू आर्य उपसंचालक 8826812375
मनोज आर्य वरिष्ठ उपमन्त्री 9717839393
राघव आर्य संगठन मन्त्री 9716811150
लक्ष्य आर्य प्रधान शिक्षक 8360606860

धर्मवीर आर्य उपसंचालक संयुक्त प्रभार
यश आर्य
संजय आर्य
धर्मवीर आर्य सह-कोषाध्यक्ष
सतीश आर्य लेखा निरीक्षक
ब्र.संदीप आर्य बौद्धिकाध्यक्ष
राजवीर शास्त्री सह-बौद्धिकाध्यक्ष
दिनेश आर्य उपमंत्री व्यवस्था
आशीष आर्य

राजू आर्य सांस्कृतिक प्र. मंत्री
कमल आर्य उपमंत्री व्यवस्था
राजेश आर्य उपमंत्री व्यवस्था
शुभम आर्य
बिट्टू आर्य कार्यालय सचिव
दिनेश आर्य सह-लेखा निरीक्षक
रमेश आर्य
वेदमित्र आर्य
संदीप आर्य मीडिया प्रभारी
करन आर्य

मंडल संचालक :- मधुर आर्य, सुरेश आर्य, रवि आर्य, विक्रम आर्य, नरेन्द्र आर्य, मोहित आर्य, साहिल आर्य, वरुण आर्य, संदीप आर्य, अभिषेक आर्य, बलवान आर्य
जिला संचालक :- सूरज आर्य, मनीष आर्य, सुमित आर्य, भुवनेश आर्य, संतोष आर्य, प्रिंस आर्य, विशाल आर्य, दीपक आर्य, विवेक आर्य, दीपीकेश आर्य, कश्मीर आर्य, विनोद आर्य
शिक्षक :- सुशील आर्य, विनीत आर्य, बॉबी आर्य, गौरव आर्य, मनोज आर्य, धीरज आर्य, प्रियांश आर्य, दीपक आर्य, तुषार आर्य, वैभव आर्य

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश (पंजी०)
कार्यालय : आर्य समाज मिंटो रोड, डी.डी.यू. मार्ग नई दिल्ली-2
Ph no. 9990-32-2200 Website : www.aryaveerdal.org
E-mail Id : aryaveerdaldelhipradesh@gmail.com

पुरोहित दीक्षा क्या-क्यों-और कैसे

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो
डा श्वेत केतु शर्मा बरेली

भूमिका व परिभाषाः- पुरोहित उसे कहते हैं जो याजक कर्मकाण्डी राजा या और किसी यजमान के यहाँ मुख्य बनकर यज्ञादि श्रौतकर्म, गृहकर्म और संस्कार तथा शांति आदि अनुष्ठान करे व कराए या कर्मकांड करनेवाला 16 संस्कारों व सनातन वैदिक पर्व कृत्य करने वाला गुण कर्म स्वभाव की व्यवस्था से जीवन को ब्राह्मण के स्वरूप में प्रतिष्ठित करने वाले व्यक्तियों को पुरोहित कहा गया है चारों वेदों में से सबसे प्राचीन ऋग्वेद है। ऋग्वेद के आधार पर वैदिक मंत्रों का आख्यान करने वाले और कर्मकांड करवाने वाले पुरोहित को 'होतृ' कहा जाता था। इसमें महिलाओं को भी पुरोहित्य कर्म करने कराने का अधिकार वेद में दिया है वेद में कहा है स्त्री ब्रह्मा बबूह अर्थात स्त्रियों को ब्रह्म बन सकती है स्त्री ब्रह्मा को श्रैष्ठ पुरोहित कहा गया है

पौरोहित्यदीक्षा वेदारंभ संस्कार के बाद जब वालक वालिकायें

गुरुकुल में सम्पूर्ण वेद वेदांत उपनिषदों ब्राह्मण ग्रन्थों साहित्य व्याकरण दर्शन विज्ञान से परिपूर्ण हो जाते हैं, उसके उपरांत 16 संस्कारों व सनातन आर्य पर्वों की विधिवत अध्ययन कराने का विधान प्राचीन काल में विद्यमान था अर्थात वेदारंभ के बाद सबको 16 संस्कारों को करने व करानें का प्रशिक्षण विद्वान आचार्य व विदुषी आचार्या के द्वारा सनातन वैदिक वाङ्गमय के आधार पर दिया जाता था, यही पौरोहित्यदीक्षा कहीं जाती है लेकिन वेदारंभ संस्कार में यदि पौरोहित्य दीक्षा नहीं ले पाता है तो वह वेद वेदाङ्गों का पन्डित अन्य किसी भी आश्रम में पौरोहित्यदीक्षा प्राप्त कर सकता है ।

पौरोहित्यदीक्षा को पूर्ण करने से पूर्व यह भी जानना आवश्यक है कि कौन कौन से प्राचीन भारतीय शास्त्रों का अध्ययन करने के उपरांत पुरोहित बन सकते हैं यहां जो सूची दी जा रही है उसमें कुछ ग्रन्थों को मेंने देखा व पढ़ा है परन्तु काफी कुछ ग्रन्थों के नाम युग निमार्ता महर्षि दयानंद सरस्वती व सुविख्यात विद्वान आचार्य कामता प्रसाद मिश्र जी प्रयागराज उ प्र के आधार पर संकलित हैं :-ज्ञानार्जन के लिए प्रस्तुत हैः-वेद, वेदांग, उपवेद, इतिहास और पुराण, दर्शन, स्मृति, निबंध ग्रंथ, आगम।उसके बाद उपवेद, फिर वेद के अंग तथा उपांग हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं, मंत्र भागात्मक वेद के चार भेद है- ऋग, यजु, साम अथर्ववेद के छः भाग कहे गए हैंःमहर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने वेदभाष्य निर्माण से पूर्व एक विस्तृत भूमिका की रचना की जिसमें अपने वेदभाष्य के उद्देश्यों का स्पष्टीकरण किया, तथा पुरोहित दीक्षा के मापदंड निर्धारित किये, इस ग्रन्थ में ऋषि ने अपने सभी वेदविषयक सिद्धान्तों का विशद निरूपण किया है, उन्होंने स्पष्ट किया किया कि पौरोहित्यदीक्षा के लिए कुछ आर्ष ग्रन्थों का विधिवत अध्ययन आवश्यक है। इसमें लगभग पैंतीस शीर्षकों के अन्दर वेद के प्रमुख प्रतिपाद्य पर प्रभूत प्रकाश डाला गया है जिन में से आगे लिखे विषय विशेष उल्लेखनीय हैं - वेदोत्पत्ति, वेदनित्यत्व, वेदविषय, वेदसंज्ञा, ब्रह्मविद्या, वेदोक्तधर्म, सृष्टिविद्या, पृथिवी आदि का भ्रमण, गणित, मुक्ति, पुनर्जन्म, वर्णाश्रम, पञ्चमहायज्ञ, ग्रन्थप्रामाण्य, वेद के ऋषि - देवता - छन्द - अलंकार- व्याकरण आदि का विस्तार से वर्णन है , इसके अतिरिक्त महर्षि दयानंद सरस्वती ने पौरोहित्यदीक्षा के लिए निम्न ग्रन्थों को प्रमाणित माने हैः-

सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, ऋग्वेद भाष्य, यजुर्वेदभाष , चतुर्वेदविषयसूची, संस्कारविधि, पंचमहायज्ञविधि, आर्याभिविनय, गोकरुणानिधि, आर्योद्देश्यरत्नमाला, भ्रान्तिनिवारण, अष्टाध्यायीभाष्य, वेदांगप्रकाश, संस्कृतवाक्यप्रबोध, व्यवहारभानु , पर्व पद्धति आदि।

मन्त्रसंहिताः इन चारों वेदों की ११३१ संहिताएँ थीं लेकिन आज सिर्फ १४ ही उपलब्ध हैं। ऋग्वेदः इसकी २१ संहिताएँ होती हैं, जिनमें आजकल ह्लबाष्कलह्ल और ह्लशाकलह्ल ये दो संहिताएँ मिलती हैं। ह्लबाष्कलह्ल में अष्टक, आध्यायिक क्रम है और शाकल में मण्डल, अनुवाक आदि। शेष संहिताएँ लुप्त हैं।यजुर्वेदः इसकी १०१ संहिताएँ हैं। यजुर्वेद के दो भेद माने जाते हैंःशुक्लः शुक्ल यजुर्वेद की १५ संहिताएँ हैं, उनमें केवल दो संहिताएँ मिलती हैं - वाजसनेयी या माध्यंदिनी और काव्य या कण्व, शेष लुप्त हैं। कृष्णः कृष्ण यजुर्वेद कि ८६ संहिताएँ होती हैं। इनमें से पाँच मिलती हैं - तैत्तिरीय संहिता, मैत्रायणी, कठ, कपिष्ठक और श्वेताश्वतर। शेष लुप्त है।

सामवेदः इसकी १००० संहिताए हैं, उनमें आजकल ३ मिलती हैं - कौथुमीया, जैमिनीया और राणायनीया संहिता का कुछ भाग मिलता है।अथर्ववेदः इसकी ९ संहिताएँ हैं, इनमे आज दो मिलती हैं - शौनकीया और पैप्पलादी।ब्राह्मणग्रंथः मंत्रभाग की जितनी संहिताएँ होती हैं, ब्राह्मण भाग भी उतना ही होता है, क्योंकि शब्द और अर्थ का सम्बन्ध हुआ करता है। आरण्यक और उपनिषदें भी उतनी ही होती हैं। श्रौतसूत्र भी उतने ही तथा गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, अनुक्रमणी और प्रातिशाख्य भी उतने ही होते हैं। ऋग्वेदः इसके ऐतरेय और कौशीतकी (सांख्यायन) यह दो ब्राह्मणग्रंथ मिलते हैं। यजुर्वेदः

कृष्ण यजुर्वेदः इसके तैत्तिरीय ब्राह्मण तथा तैत्तिरीय संहिता का मध्यवर्ती ब्राह्मण। शुक्ल यजुर्वेदः इसका शतपथ ब्राह्मण। यह भी दो प्रकार का हैः काव्य शाखा वाला १७ काण्डों का है माध्यंदिनी शाखा का १४ काण्डों का है। सामवेदः इसके ताण्ड ब्राह्मण, षडविंश ब्राह्मण, सामविधान ब्राह्मण, आर्षेय ब्राह्मण, मंत्र ब्राह्मण, दैवताध्याय ब्राह्मण, वंश ब्राह्मण, संहितोपनिषद ब्राह्मण, जैमिनीय ब्राह्मण और जैमिनीय उपनिषद ब्राह्मण आदि १० ब्राह्मण ग्रंथ हैं। अथर्ववेदः इसका गोपथ ब्राह्मण।

आरण्यकः ब्राह्मण ग्रंथों के जो भाग वन में पढ़ने योग्य हैं उन्हें आरण्यक या उपनिषद कहते हैं। इस समय प्राप्त उपनिषदों की कुल संख्या २७५ है किन्तु निम्नलिखित १३ ही प्रमुख हैंःईश (ईश यजुर्वेद की मूल संहिता में ही है), केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीऐतरेय

, छांदोग्य, वृहदारण्यक, कौशीतकी, मैत्रायणीश्वेताश्वतर, सूत्रग्रंथः ये तीन प्रकार के हैंः , श्रौतसूत्रः श्रौतसूत्रों में कल्प नामक वेदांग के कर्मकाण्ड सम्बंधी अध्याय को स्पष्ट किया गया है। इस समय निम्नलिखित श्रौतसूत्र उपलब्ध हैंःऋग्वेदः इसके आश्वलायन और सांख्यायन श्रौतसूत्र।यजुर्वेदःकृष्ण यजुर्वेदः इसके आपस्तंब, हिरण्यकेशीय (सत्याषाढ़), बोधायन, भारद्वाज, वैखानस, बाधूल, मानव और वराह श्रौतसूत्र आदि कुल ८ हैं। शुक्ल यजुर्वेदः इसका कात्यायन श्रौतसूत्र।

सामवेदः इसके मशक, लाह्यायन, द्राह्यायण और खादिर श्रौतसूत्र हैं।

, अथर्ववेदः इसका वैतान श्रौतसूत्र।, गृह्यसूत्रः वैदिक यज्ञादि तथा गृहस्थ कर्मों के विधान का वर्णनधर्मसूत्रः धमार्चार कर्मों के विधान का वर्णन। प्रमुख धर्मसूत्र हैंः, गौतमवसिष्ठ, आपस्तम्ब, ।बोधायनप्रतिशाख्यः प्रतिशाख्य एक प्रकार के वैदिक व्याकरण हैं । अनुक्रमणीः वेदों की रक्षा तथा वेदार्थ का विवेचन इन ग्रंथों का विषय है। विभिन्न वेदों की अनुक्रमणियाँ होती हैं जिनमें से ऋग्वेद की आषार्नुक्रमणी, छन्दोनुक्रमणी, देवतानुक्रमणी, अनुवाकानुक्रमणी, सवार्नुक्रमणी, बृहद्दैवत, ऋग्विज्ञान, शांख्यायन परिशिष्ट, आश्वलायन परिशिष्ट और ऋक्प्रतिशाख्य आदि कुल १० अनुक्रमणियाँ हैं। कृष्ण यजुर्वेद की आत्रेयानुक्रमणी, चारायणीयानुक्रमणी और तैत्तिरीय प्रातिशाख्य एवं शुक्ल यजुर्वेद की प्रातिशाख्य सूत्र और कात्यायनानुक्रमणी हैं। यज्ञों में कुल १६ ऋत्विक होते हैं जिनमें चार प्रमुख हैं, जो ये क्रम से चारों दिशाओं में बैठते हैं।ऋग्वेद के ऋत्विक को होता कहते हैं। यजुर्वेद के ऋत्विक को अध्वर्यु कहते हैं। सामवेद के ऋत्विक को उद्गाता कहते हैं

अथर्ववेद के ऋत्विक को ब्रह्मा कहते हैं। उपवेदः जैसे वेद ४ प्रकार का होता है, वैसे ही सभी वेदों के उपवेद भी हैंःअथर्ववेद का आयुर्वेद जिसमें अश्विनी कुमार संहिता, ब्रह्म संहिता, मलसंहिता, धन्वंतरि सूत्र, सूपशास्त्र, जाबालिसूत्र, सुश्रुत संहिता, भेल संहिता, कश्यप संहिता, चरकसंहिता और अष्टांगहृदय आदि ग्रंथ उपलब्ध हैं।

यजुर्वेद का धनुर्वेद जिसमें वैशम्पायनकृत नीतिप्रकाशिका, युक्ति कल्पतरु और समरांगण सूत्रधार आदि ग्रंथ उपलब्ध हैं।सामवेद का गान्धर्ववेद जिसमें भरत मुनि विरचित नाट्यशास्त्र, शारंगदेव का संगीत रत्नाकर और दामोदर कृत संगीत दर्पण आदि ग्रंथ उपलब्ध हैं।

ऋग्वेद का अर्थवेद जिसमें कौटिल्य का अर्थशास्त्र, सोमदेवभट्ट का नीतिवाक्यामृत सूत्र, चाणक्य सूत्र, कामन्दक और शुकनीति आदि ग्रंथ उपलब्ध हैं।

वेदांगः वेद के अंग छः होते हैं जिन्हे वेदांग कहा जाता हैः शिक्षाः

ऋग्वेदः पाणिनीय शिक्षा, यजुर्वेदः, कृष्ण यजुर्वेदः व्यास शिक्षा, शुक्ल यजुर्वेदः याज्ञवल्क्य आदि २५ शिक्षा ग्रंथ हैं।सामवेदः गौतमी, लोमशी और नारदीय शिक्षायें हैं।अथर्ववेदः माण्डुकीय शिक्षा ।कल्पः नक्षत्र कल्प, संहिता कल्प, आंगिरस कल्प, शान्ति कल्प, वैतान कल्प आदि ग्रंथ मिलते हैं। कल्प मे वेदमंत्रों का विनियोग मिलता है।

व्याकरण, निरुक्त, छन्दः, ज्योतिषभृगुसंहिता आदि का विधिवत अध्ययन कराया जाता था ।

पुराणः जिनमें सभी की संख्या १८-१८ है महापुराण ब्रह्म, पद्म , विष्णु, शिव, लिंग , गरुड़ , नारद, भागवत, अग्नि

स्कन्द , भविष्य , ब्रह्मवैवर्त , मार्कण्डेय , वामन , वाराह, मत्स्य , कूर्म , ब्रह्माण्ड, लघु पुराणः इसे आम भाषा में पुराण कहते हैं।वृहद्विष्णु

शिव उत्तरखण्ड, लघु वृहन्नारदीय, मारकण्डेय, वह्नि, भविष्योत्तर, वराह

स्कन्द, वामन, वृहद्वामन, वृहन्मतस्य, स्वल्पमतस्य, लघुवैवर्त्य , अन्य ५ प्रकार के भविष्य पुराण, अतिपुराणः, सनत्कुमार, बृहन्नारदीय, आदित्य

, मानव, नन्दिकेश्वर, कौर्म, भागवतवसिष्ठ, भार्गव , मुद्गल , कल्कि , देवी

महाभागवत , बृहद्धर्म , परानंद , पशुपति, वह्नि, हरिवंश, उप पुराणः, आदिनरसिंह, स्कन्द, शिवधर्म, दुवार्सा, नारदीय, कपिल,

वामन, महेश्वर, औशनस, ब्रह्माण्ड, वरुण, कालिका, साम्ब, सौरि, पाराशर, मारीच भास्कर आदि मिलते हैं -

विषेश-परन्तु इसमें बहुत से पुराण उपपुराण प्रमाणित नहीं है , कपोल-कल्पित है जो अन्धविश्वास कुरीतियों को उत्पन्न कर रहे है उन पर विश्वास नहीं कर सकते हैं वैदानुकूल नहीं है । लेकिन पढ़ना आवश्यक है क्योंकि जिससे सत्य असत्य का विवेचन हो सके ।

तंत्रशास्त्रः पुराणों मे तन्त्रग्रंथों का भी समावेश हो जाता है। तंत्रशास्त्र में भी वेदों के विषय विभिन्न अधिकारियों के लिए बतलाये गए हैं। इनमें आचार, उपासना, ज्ञान , मन्त्र, हठ, आदि योग, आयुर्वेद के वाजीकरण आदि के गुप्त योग, भूतविद्या, रसायन आदि सभी विद्यायें और ज्योतिष के रहस्य स्पष्ट किये गए हैं। इसमें भी बहुत से प्रसंग वैदिक प्रमाणित नहीं है ।

इतिहासः इसमें मुख्यतः रामायण, महाभारत लिए जाते हैं। इनमें रामायण आदिकवि वाल्मीकि की आदिम मधुर रचना है। इसमें श्री राम अवतार का वर्णन है। इसकी पद्य संख्या २४ हजार है। दूसरा है महाभारत ये १ लाख पद्यों का है। इसमे १८ पर्व हैं।

शास्त्रः इसमें ६ दर्शन आते हैंः सांख्य दर्शनः श्री कपिल मुनि से प्रणीत है। इसमे प्रकृतिझ पुरुष का वर्णन है।योग दर्शनः इसके कर्ता श्री पतंजलि मुनि हैं। इस पर व्यास का भाष्य है। इसमें योग की ग्रंथियाँ सुलझाई गई हैं।वैशेषिक दर्शनः इसके प्रणेता श्री कणाद मुनि हैं। इसका प्रशस्तपाद का भाष्य है। इसमें संसार को ६ भागों मे विभक्त करके उसका विवरण दिया गया है।न्याय दर्शनः इसमें १६ पदार्थों का तत्वज्ञान प्रतिपादित है। गौतम मुनि प्रणेता हैं। श्री वात्स्यायन मुनि का इस पर भाष्य है।मीमांसा दर्शनः इसके श्री जैमिनी जी कर्ता हैं। वैदिक कर्मकांड की मीमांसा इसका विषय है। इस पर श्री शंकराचार्य का भाष्य है।वेदांत दर्शनः इसके कर्ता श्री वेदव्यास हैं, इसमें जीवझ ब्रह्म की अद्वैतता पर विचार किया गया है। इस पर श्री शंकराचार्य, स्वामी रामानुजाचार्य, श्री माध्वाचार्य, श्री वल्लभाचार्य आदि के भाष्य मिलते हैं।

स्मृतियाँः स्मृतियाँ भी बहुत होती हैं, जितनी वेदसंहितायें हैं, उतने ही श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र तथा स्मृतियाँ होती हैं। धर्म के सूत्रों (संक्षेप) का नाम धर्मसूत्र है, वेदार्थ के स्मरण का नाम स्मृति होता है। स्मृतियों मे आचार, संस्कार , वर्णधर्म, वर्णसंकर धर्म , स्त्रीत्वधर्म, पुरुषधर्म, राजधर्म, प्रायश्चित्तादि बहुत विषय आये हैं। न्यायदर्शन के भाष्यकार श्री वात्स्यायन मुनि ने लिखा है कि "यदि धर्मशास्त्र न हो, तो लोकव्यवहार का उच्छेद हो जायह्न यह ठीक ही है। विधिनिषेध सब स्मृतियों से ज्ञात होते हैं। वेद, स्मृति एवं पुराण के विरोध में वेद अधिक माननीय हैं। १०० से अधिक स्मृतियाँ उपलब्ध हैं। इनमे से मुख्य हैंःमनुस्मृति, वृद्धमनु, आंगिरस, अत्रि, आपस्तम्ब, औशनस

कात्यायन, गोभिल (प्रजापति), यम, बृहद्धर्म, लघुविष्णु, वृहद्विष्णु

नारद, शातातप, हारीत, वृद्धहारीत, लघुआश्वलायन, शंख, लिखित

शंख-लिखित, याज्ञवल्क्य, व्यास, संवर्त, दक्ष, देवल, बृहस्पति, पाराशर

बृहत्पराशर, कश्य, गौतम, वृद्धगौतम, वसिष्ठ, पुलत्स्य, योगीयाज्ञवल्क्य

व्याघ्रपाद, बोधायन, कपिल, विश्वामित्र, शाण्डिल्य, कण्व, दाभ्य, भारद्वाज, मार्कण्डेय, लौगाक्षी आदि - विशेष :-इन उपरोक्त स्मृतियों में मनुस्मृति व कुछ श्रृषियों द्वारा रचित स्मृतियों को प्रमाणित माना जाता है बाकी सभी कपोल कल्पित कल्पना पर आधारित है उन पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

आगम ग्रंथः आगम के दो भाग हैंःदक्षिणागम (समयमत)ः श्रुतियों में दक्षिणागम का मूल है तो पुराणों में उसका विस्तार हुआ है। ये तीन प्रकार के हैंःवैष्णवागमः इसमें पांचरात्र और वैखानस आगम दो प्रकार के ग्रंथ उपलब्ध हैं।शैवागमः भगवान शंकर के मुख से २८ प्रमुख और १८० उपतंत्र प्रकट हुए थे जिसमें ६४ मुख्य हैं। पाशुपत सूत्र, नरेश्वर परीक्षा, तत्वसंग्रह, भोगकारिका, मोक्षकारिका, परमोक्ष निराश कारिका, श्रुतिसूक्तिमाला, चतुर्वेद तात्पर्य संग्रह, तत्व प्रकाशिका, सूत्रसंहिता, नारदकारिका और रत्नत्रय आदि ग्रंथ उपलब्ध हैं।शाक्तागमः इसमें सात्विक ग्रंथों को तंन्त्र, राजसिक को यामल तथा तामसिक को डामर कहते हैं। असुरों की परम्परा का मुख्य शास्त्र वामागम है। इनमें ६४ ग्रंथ मुख्य हैं लेकिन सभी उपलब्ध नहीं हैं। शारदातिलक और मंत्र महार्णव उपलब्ध हैं। बाकी नेपाल के मंदिरों और अपने देश में रखे हुए हो सकते हैं। तमाम ग्रंथों की जानकारी सार्वजनिक रूप से नहीं है।

विशेषः-आगम ग्रन्थों में भी विभिन्न विद्वानों के अलग-अलग मत हैं कुछ प्रमाणित नहीं , कुछ ठीक है। उपसंहार -यहां उपरोक्त पुरोहित दीक्षा के लिए जिन ग्रन्थों का अध्ययन किया जाता है उनमें उन्हीं को प्रमाणित माना गया है जो वेदों के अनुसार सुनिश्चित हुए हैं अर्थात जिनकों वेदों से प्रमाणित किया गया है।मेरा अपना अनुभव व आकलन है कि पुरोहित दीक्षा के लिए विशेष रूप से चारों वेद, उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, मनुस्मृति, कर्मकाण्ड से सम्बंधित संस्कार विधि, पर्व पद्धति व विभिन्न धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया जाना पर्याप्त है। वैसे यदि पुरोहित दीक्षा के लिए उपरोक्त वर्णित सनातन संस्कृति से सम्बन्धित सभी का आदिता अध्ययन किया जाये तो उसको पूर्ण दीक्षित पुरोहित कहा जाता है। यही पौरोहित्यदीक्षा का विस्तार से वर्णन है

डा श्वेत केतु शर्मा बरेली
पूर्व सदस्य हिन्दी सलाहकार समिति
भारत सरकार

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा
(आर्ष वैदिक साहित्य एवं राष्ट्र चेतना संबंध साहित्य के प्रकाशक)

प्रकाशित पुस्तकों की सूचीः

अर्चना यज्ञ पद्धति ..... मूल्य रू. 20
आर्य पर्व पद्धति ..... मूल्य रू. 25
यज्ञ पद्धति ..... मूल्य रू. 35
आर्य समाज बुला रहा है ..... मूल्य रू. 6
कर्मफल रहस्य ..... मूल्य रू. 10
आर्य समाज की मान्यताएं ..... मूल्य रू. 8
आर्य समाज की विचारधारा ..... मूल्य रू. 5
सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़े ..... मूल्य रू. 2
महर्षि दयानंद के जीवन के विविध प्रसंग मूल्य रू. 20
नीति शतक भाग-1, भाग-2----------(प्रत्येक का मूल्य रू. 20)
वैदिक सिद्धांत विमर्श ..... मूल्य रू. 25
भजन माला ..... मूल्य रू. 20
आर्योद्देश्यरत्नमाला ..... मूल्य रू. 8
महर्षि दयानंद की विशेषताएं ..... मूल्य रू. 8
आर्य समाज की मान्यताएं ..... मूल्य रू. 8
अंत्येष्टि संस्कार विधि ..... मूल्य रू. 8
आर्य कन्या की सूझबूझ ..... मूल्य रू. 8
दयानंद लघु ग्रंथ संग्रह ..... मूल्य रू. 60
संस्कार विधि ..... मूल्य रू. 80
दयानंद सुविचार धन ..... मूल्य रू. 70
कथा सरोवर ..... मूल्य रू. 50
मानव कल्याण निधि ..... मूल्य रू. 100
सत्यार्थ प्रकाश बिना जिल्द (छोटा) मूल्य रू. 80
सत्यार्थ प्रकाश सजिल्द (बड़ा) .. मूल्य रू. 250
प्रखर राष्ट्रचेता महर्षि दयानंद ....प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी विरजानंद
प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी श्रद्धानंद ..प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी दर्शनानंद
प्रखर राष्ट्रचेता महात्मा हंसराज ..प्रखर राष्ट्रचेता महात्मा लेखराम
प्रखर राष्ट्रचेता गुरुदत्त विद्यार्थी .प्रखर राष्ट्रचेता लाला लाजपत राय
प्रखर राष्ट्रचेता पं. रामप्रसाद बिस्मिल .प्रखर राष्ट्रचेता सरदार भगत सिंह
प्रखर राष्ट्रचेता डॉक्टर हेडगेवार ..प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी विवेकानंद
प्रखर राष्ट्रचेता सरदार पटेल ....प्रखर राष्ट्रचेता प्रकाशवीर शास्त्री
प्रखर राष्ट्रचेता डॉ. भीमराव अंबेडकर
प्रखर राष्ट्रचेता पं. श्यामा प्रसाद मुखर्जी प्रखर राष्ट्रचेता पं. दीनदयाल उपाध्याय
(ऐसे ही अन्य अनेक महापुरुषों के संक्षिप्त जीवन चरित्र/ प्रत्येक का मूल्य रू.10/)
अग्निहोत्र लैमिनेटेड फोल्डर मूल्य रू.10 ब्रह्म यज्ञ (संध्या) लैमिनेटेड फोल्डर रू. 6
महिला क्रांति गीत ..... मूल्य रू. 80
रंग बदलती दुनिया ..... मूल्य रू. 50
योग यौवन और प्रकृति पर्यावरण .. रू. 100
चतुर्वेद भाष्य .....संस्कार विधि
मनु स्मृति .....गौ करुणानिधि
यज्ञ और पर्यावरण .....बंदा बैरागी
दयानंद सप्तक
हिंदी के प्रचार प्रसार में आर्य समाज की भूमिका
रामायण का वास्तविक स्वरूप
यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा सामवेद
(कवि वीरेंद्र राजपूत कृत काव्यार्थ)
लाला लाजपत राय समग्र
स्वामी श्रद्धानंद समग्र
जन जागरण भाग 2 ..... मूल्य रू. 70

आदि सहित आर्यावर्त प्रकाशन एवं देश के प्रमुख प्रकाशनों के साहित्य बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। समस्त साहित्य पर विशेष छूट उपलब्ध है कृपया आज ही साहित्य खरीदें और पाएं विशेष छूट।

संपर्क सूत्र : 94121 39333, 87552 68578

महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व

महर्षि दयानन्द अपने समकालीन सभी व्यक्तियों की अपेक्षा शारीरिक, बौद्धिक एवं अध्यात्मिक दृष्टि से सर्वोच्च शिखर पर थे वे शारीरिक एवं बौद्धिक दोनों दृष्टियों से विशालकाय थे और अपने समकालीन लोगों में सर्वश्रेष्ठ थे भारत में रहने वाले सभी बुद्धिजीवी एवं विद्वान उनके सामने हर प्रकार से बौने थे कारण की सुदृढ़ माता-पिता के घर जन्म लेकर वे जीवनभर ब्रह्मचारी रहे वे पारिवारिक एवं सांसारिक चिंताओं से सदा मुक्त रहे उनके ब्रम्हचर्य का प्रभाव ही था कि हिमालय की भयंकर ठण्ड हो अथवा राजस्थान की तपती रेत उनके शरीर पर बहुत कम वस्त्र होते थे पर उन्हें कभी कोई कठिनाई नही हुई

6 फीट 9 इंच लम्बे, लोहे जैसा सुदृढ़ शरीर, हेरक्यूलिस जैसी शक्ति के स्वामी, चट्टान जैसी दृढ़ इच्छाशक्ति वाले, केवल एक लंगोटधारी पहनने वाले स्वामीजी ने क्रोधित भीड़, किराये के गुण्डों, मतान्ध लोगों तथा कातिलों का सामना किया और कभी विचलित नही हुऐ

महर्षि दयानन्द की शारीरिक क्षमता से सम्बंधित कुछ घटनाये :-

१- आगरा में 1863-1865 दो वर्ष की अवधी में प्राय: आगरा से मथुरा की 39 मील की दूरी मात्र ३ घंटे में पैदल तय कर लिया करते थे

२- १८६७ में चासी बुलंदशहर के नामी पहलवान ओंकारनाथ बोहरा ने स्वामीजी के पैर दबाने की प्रार्थना की उसने पाया कि स्वामीजी के पैर लोहे की तरह मजबूत थे

३- १८६९ में कुछ पहलवान फरुर्खाबाद में स्वामीजी के पास आये और बोले कि यदि आप व्यायाम करें तो बहुत शक्तिशाली हो जायेंगे स्वामीजी ने अपनी भीगी लंगोटी उनको देकर एक बूँद पानी निकाल देने को बोला पर उनमें से कोई सफल न हुआ, फिर स्वामीजी ने उसी लंगोटी को निचोड़ा तो पानी टपकने लगो

४- १८७७ जालंधर में सरदार विक्रम सिंघ ने स्वामीजी से कहा कि हमने शास्त्रों में पढ़ा है कि ब्रहमचर्य से महान शक्ति प्राप्त होती है, हम एक ब्रह्मचारी की शक्ति देखना चाहते हैं स्वामीजी तब कुछ नही बोले विक्रम सिंघजी उठ खड़े हुए और बग्घी में बैठ गए जिसे दो शक्तिशाली घोड़े खींच रहे थे साईस ने लगाम खींचा, घोड़ों को चाबुक मारे पर वे हिले तक नही वो चाबुक मारता रहा, लगाम खींचता रहा पर कोई प्रभाव न हुओ विक्रम सिंघ ने पीछे देखा तो आश्चर्यचकित हो गए, चार पहियों की बग्घी का एक पहिया स्वामीजी ने पकड़ा हुआ थो स्वामीजी मुस्कुराये और विक्रम सिंघ ने पूछा कि क्या अब आप एक ब्रह्मचारी की शक्ति से आश्वस्त हैं?

५- स्वामीजी के जीवनी लेखक समाज सुधारक दीवान हरविलासजी सारदा ने भी स्वामीजी के बल की एक घटना

अपनी आँखों से स्वयं देखी थी अजमेर में सेठ गजमल के नोहरे में स्वामीजी के प्रवचनों हो रहे थे एक दिन प्रवचन के बाद २०-२५ व्यक्तियों को छोड़कर सभी श्रोता चले गऐ स्वामीजी भी उठे जब सभी मुख्य द्वार पर पहुंचे तो देखा कि भारी-भरकम मुख्य द्वार बंद है कुछ लोग आगे बढ़े और स्वामीजी को निकालने के लिए द्वार खोलने लगे लगभग १२-१५ व्यक्तियों ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी पर दरवाजा हिला तक नही दीवानजी के पिताजी(दीवानजी सदैव पिता के साथ प्रवचन सुनने जाया करते थे) व अन्य ४-५ लोग स्वामीजी के पास खड़े होकर अन्य लोगों के प्रयास को देख रहे थे जब द्वार ने खुलने से मना कर दिया तब स्वामीजी ने उनको हटने के लिए बोला और एक पैर लकड़ी के उस द्वार पर जमाया और एक ही झटके में द्वार खोल दियो उनकी शक्ति देखकर सभी आश्चर्य और श्रद्धा से भर गऐ

महर्षि का अद्भुत साहस और निर्भयता :-

१- १८६७ फरुर्खाबाद में ठाकुरदास व अन्य लोगों ने कुछ गुण्डों को स्वामीजी पर आक्रमण करने के लिए भेजो सेठ जगन्नाथप्रसाद ने स्वामीजी से किसी सुरक्षित स्थान पर चले जाने का निवेदन कियो स्वामीजी ने कहा कि मेरे जीवन पर कितने प्राणघातक आक्रमण हुए हैं पर मैं यहाँ से वहां निशस्त्र घूमता हूँ, आप मेरी रक्षा कब तक करेंगे?

२- १८६९ कानपुर में कुछ लोगों ने स्वामीजी पर आक्रमण किया, स्वामीजी ने एक व्यक्ति की लाठी छीन ली और उसे गंगा में धक्का दे दिया और पास के पेड़ से शाखा तोड़कर कुछ व्यक्तियों को धूल चटा दी, और बोले ह्लतुम लोग मुझे निरा साधु ही मत समझनोह्व

३- फरुर्खाबाद में २३ मई १८७६ को रेवेरेन्ड लूक्स ने स्वामीजी से कहा कि यदि आपको तोप के मुंह पर बांधकर यह कहा जाये कि आप मूर्ति के सामने नतमस्तक हो जाएँ, अन्यथा आपको उड़ा दिया जायेगा तो आपका उत्तर क्या होगा? स्वामीजी ने एकदम कहा कि मैं कहूँगा ह्लउड़ा दोह्व

महर्षि की क्षमाशीलता :-

१- जब भी स्वामीजी को शारीरिक या आर्थिक हानि पहुँचाने का प्रयास किया गया तो उन्होंने अपराधी को सदैव क्षमा कर दियो जैसे उन्हें कई बार विष देकर प्राणघातक प्रहार किये गऐ १८७० में अनूपशहर की घटना है, एक ब्राह्मण ने उन्हें पान में विष दे दियो अपराधी पकड़ा गया पर स्वामीजी ने यह कहते हुए उसे छुड़ा दिया कि मैं संसार को बंधनमुक्त कराने आया हूँ, बंधवाने नही

२- १८७७ में अमृतसर में अपने अध्यापक के कहने पर मिठाई के लालच में बच्चों ने स्वामीजी ने पत्थर फेंकें पुलिस ने उन्हें पकड़ लियो स्वामीजी ने अध्यापक को क्षमा कर दिया और बच्चों में मिठाई बाँट दी

३- ठाकुर कर्ण सिंह ने उनपर तलवार से वार किया, स्वामीजी ने उसकी तलवार को पकड़कर तोड़ डाली, लोगों ने स्वामीजी पर दबाव बनाया कि वे कर्ण सिंह के विरुद्ध पुलिस में शिकायत करें पर स्वामीजी ने ऐसा करने साफ मना कर दियो

महर्षि की वाकपटुता व हास्य प्रवृति :-

स्वामीजी तुरन्तबुद्धि थे, उनमें हास्य की प्रवृति भी बहुत थी और वे अपनी इस शैली द्वारा भी समाज में सुधार का ही प्रयास करते थे एक बार स्वामीजी अन्य व्यक्तियों के साथ फर्श पर बैठे थे, एक पण्डित आया और ऊँचे चबूतरे पर बैठ गयो स्वामीजी से वातार्लाप करते हुए भी नीचे नही उतरा तो बाकी लोगों उसके इस व्यव्हार पर आपत्ति जताईं तो स्वामीजी ने कहा ह्लउसे वहीँ बैठने दो यदि उच्चासन विद्वता का प्रतीक है तो पेड़ पर बैठा कौवा पण्डित से अधिक विद्वान माना जायेगो

यज्ञ के उत्कृष्ट सूक्तियां

१. यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म ।। (शतपथ ब्राह्मण)
यज्ञ दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म है ।

२. यज्ञो वै कल्पवृक्षः ।।
यज्ञ कामनाओं को पूर्ण करनेवाला है ।

३. ईजानाः स्वर्गं यन्ति लोकम् ।। (अथर्ववेद १८.४.२)
यज्ञकर्त्ता स्वर्ग (सुख) को प्राप्त करते है ।

४. अग्निहोत्रं जुहूयात् स्वर्गकामः ।।
स्वर्ग की अभिलाषा रखने वाले व्यक्ति यज्ञ करें ।

५. होतृषदनम् हरितम् हिरण्यम् ।।
यज्ञ वाले घर धन - धान्य से पूर्ण होता है ।

६. यज्ञात्भवति पर्जन्यः ।।
यज्ञ से वर्षा होती है ।

७. इयं ते यज्ञियाः तनू ।।
ये तेरा शरीर यज्ञादि शुभ कर्मों के लिए है ।

८ . स्वर्ग कामो यजेत् , पुत्र कामो यजेत् ।।
स्वर्ग और पुत्र की कामना करनेवाले व्यक्ति यज्ञ करें ।

९. यज्ञं जनयन्त सूरयः ।। (ऋग्वेद १०.६६.२)
हे विद्वान् ! संसार में यज्ञ का प्रचार करो ।

१०. यज्ञो वै देवानामात्मा ।। (शतपथ)
यज्ञ देवताओं की आत्मा है ।

११. यज्ञेन दुष्यन्तो मित्राः भवन्ति ।। (तै ० उप०)
यज्ञ करने वाले व्यक्ति के शत्रु भी मित्र बन जाते है ।

१२ . प्राचं यज्ञं प्रणयता सखायः ।। (ऋग्वेद १०.१०१.२)

१३. अयज्वानः सनका प्रेतमीयुः (ऋग्वेद १.३३.४)
यज्ञ न करनेवाले उन्मत्त का सर्वनाश हो जाता है ।

१४. न मर्धन्ति स्वतवसो हविष्कृतम्।। (ऋग्वेद १. १६६ .२)
याज्ञिक को महाबली भी नहीं मार सकता ।

१५. सजोषसो यज्ञमवन्तु देवाः ।। (ऋग्वेद ३.८.८)
विद्वान् परस्पर प्रीतिपूर्वक यज्ञ की रक्षा करें ।

१७. यज्ञस्य प्राविता भव ।। (ऋग्वेद ३.२१.३)
तू यज्ञ का रक्षक बन ।

१८. यज्ञो हित इन्द्र वर्धनो भूत् ।। (ऋग्वेद ३.३२.१२)
हे जीव ! यज्ञ ही तुझे बढ़ानेवाला है ।

१९. यज्ञस्ते वज्रमहिहत्य आवत् ।। (ऋग्वेद ३.३२.१२)
यज्ञरूपी वज्र पाप नाश में सफलता दिलाता है ।

२०. अयज्ञियो हतवर्चा भवति ।। (अथर्ववेद १२.२.३७)
यज्ञ न करनेवाला का तेज नष्ट हो जाता है ।

ओ३म्
Kendriya Arya Yuvak Parishad Organizing
Special Holidays Package for Arya Samaj
For Booking Contact
Mr. A K Arya +91 9868051444 | Mr. DK Bhagat +91 99588 89970

Travel Date
20th to 26th June
Booking Open Till 30-April 2024
SPECIAL ARRANGEMENTS FOR SENIOR CITIZENS
Chalo BHUTAN
World's Most Beautiful Country
INCLUSION:
✓ Return Economy Class Airfare from Delhi
✓ 02 Night Thimphu in 03 Star Hotel
✓ 02 Night Punakha in 03 Star Hotel
✓ 02 Night Paro in 03 Star Hotel
✓ Veg Breakfast
✓ Tour Guide for entire tour
✓ Processing and approval permit
✓ Sightseeing
✓ All Tour and Transfer on Private Basis
INR 67,700 PP
Special offer for children (Between 05 to 12 Years)
INR 46,500 PER CHILD
Add On:
✓ Exclusive prices for 6 Dinners ₹2520/-
✓ Veg Meals are Available
4 Season Travels.Pvt. Ltd. | +91 8130106203 | info@4seasontravels.com

।। ओ३म् ।।
महान सनातन परंपराओं को जानने का प्रकल्प
आर्या प्रशिक्षण सत्र
दिनांक - 27 व 28 अप्रैल, 2024 (केवल महिलाओं के लिए)
शनिवार प्रात: 8 बजे से सायं 6 बजे, रविवार प्रात: 7 बजे से सायं 5 बजे तक
स्थान - आर्य समाज नांगलोई, दिल्ली - 110041
सत्र के विषय
मेरा जीवन क्या क्या है? इसमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण क्या है?
ईश्वर का अस्तित्व है या नही?
धर्म क्या है, मत, पंथ, संप्रदाय क्या है?
भाग्य क्या है और यह कौन लिखता है?
भूत - पिशाच, डाकिनी - शाकिनी जिन्न आदि होते हैं या नहीं?
हमारे राष्ट्र की गुलामी का क्या कारण था?
हमारा अपने राष्ट्र के प्रति क्या कर्तव्य है?
युवक - युवतियों को पाखंडों, व्यसनों से बचने के उपाय क्या है?
सुखी जीवन, उन्नत समाज व वैभवशाली राष्ट्र को बनाने के उपाय है क्या है?
सत्र के नियम
सत्र में दोनों दिन रहना अनिवार्य होगा।
सत्र में बैठने का उचित प्रबंध किया गया है।
सत्र में नाश्ता व भोजन पूर्ण रूप से निशुल्क रहेगा।
सत्र के बाद में रात को रुकने के लिए उचित प्रबंध किया गया है।
सत्र में कोई बाबा, महंत, साधु, का प्रवचन नहीं होगा अपितु प्रश्नोत्तर शैली में विद्वान/आचार्य जी से संवाद होगा।
बिना पंजीकरण के शिविर में बैठने की अनुमति नहीं होगी।
आयोजक राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा, दिल्ली

सम्पर्क सूत्र - 9313566005, 9899126258, 9350119367, 9811744170, 9212328260

।। ओ३म् ।।
प्रो० सुषमा गोगलानी
मो0 : 9582436134
प्रतिनिधि
अशोक कुमार गोगलानी
मो0 : 8587883198
HANDICRAFT
सुषमा कला केन्द्र
आकर्षक स्मृति चिन्ह तथा पारितोषिक सामग्री के लिए सम्पर्क करें।
-: मुख्य आकर्षण :-

पता : C-1/1904, चैरी काऊंटी, ग्रेटर नोएडा (वैस्ट)

वार्षिक तथा आजीवन सम्मानित सदस्यों की सेवा में आवश्यक सूचना

आदरणीय महोदय/महोदया! सादर नमन, आशा है स्वस्थ एवं सानंद होंगे।

आपकी आर्यावर्त केसरी की वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि समाप्त हो चुकी है।

अतः अनुरोध है कि आगामी वर्ष (2023-24) के नवीनीकरण हेतु **वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि रू0 100/-** अथवा **आजीवन सदस्यता सहयोग राशि (10 वर्षीय) रु. 1100/-** निम्न बचत खाते (S.B. A/C) में जमा करने का कष्ट करें :

खाते का नाम : आर्यावर्त केसरी खाता संख्या : 30404724002 IFSC कोड : SBIN0000610

शाखा : भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा

कृपया उक्त खाते में अपनी सहयोग

राशि जमा करने के उपरांत मो. नं. 9412139333 अथवा 7017448224 पर अवगत कराने का कष्ट करें। उल्लेखनीय है कि समस्त आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र उनके जन्म - दिवस के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित आर्यावर्त केसरी में प्रतिवर्ष प्रकाशित किए जायेंगे।

सादर- सधन्यवाद शुभाकांक्षी-

कृते आर्यावर्त केसरी/ प्रभारी-प्रसार

स्वामी जी की पुण्यतिथि 3 अप्रैल पर विशेष

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का उपदेश

आर्यावर्त केसरी समाचार

एक बार आर्य समाज के स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी भिक्षा माँगते हुए एक घर के सामने खड़े हुए और उन्होंने आवाज लगायी - वैदिक धर्म की जय ! घर से महिला बाहर आयी। उसने उनकी झोली में भिक्षा डाली और कहा, महात्मा जी, कोई उपदेश दीजिए! स्वामी जी बोले, आज नहीं, कल दूँगा। दूसरे दिन स्वामीजी ने पुनः उस घर के सामने आवाज दी वैदिक धर्म की जय ! उस घर की स्त्री ने उस दिन खीर बनायीं थी, जिसमें बादाम-पिस्ते भी डाले थे। वह खीर का कटोरा लेकर बाहर आयी। स्वामीजी ने अपना कमंडल आगे कर दिया। वह स्त्री जब खीर डालने लगी, तो उसने

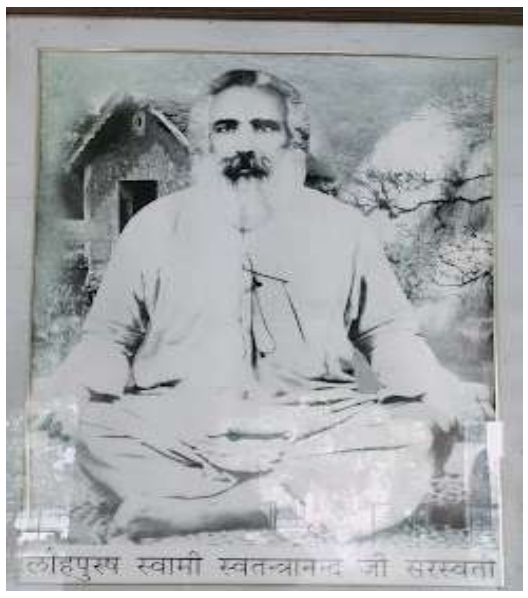

देखा कि कमंडल में गोबर और कूड़ा भरा पड़ा है। उसके हाथ ठिठक गए। वह बोली, महाराज ! यह कमंडल तो गन्दा है। स्वामीजी बोले, हाँ, गन्दा तो है, किन्तु खीर इसमें डाल दो। स्त्री बोली, नहीं महाराज, तब तो खीर खराब हो जायेगी। दीजिये यह कमंडल, में इसे शुद्ध कर लाती हूँ। स्वामीजी बोले, मतलब जब यह कमंडल साफ हो जायेगा, तभी खीर डालोगी न ?

स्त्री ने कहा : जी महाराज !

स्वामीजी बोले, मेरा भी यही उपदेश है। मन में जब तक चिन्ताओं का कूड़ा-कचरा और बुरे संस्कारों का गोबर भरा है, तब तक उपदेशामृत का कोई लाभ न होगा। यदि उपदेशामृत पान करना है, तो प्रथम अपने मन को शुद्ध करना चाहिए, कुसंस्कारो का त्याग करना चाहिए, तभी सच्चे सुख और आनन्द की प्राप्ति होगी।

डॉ विवेक आर्य

समस्यायें और समाधान

आर्यावर्त केसरी समाचार

समस्याएं किसके जीवन में नहीं हैं? सबके जीवन में हैं। "छोटी बड़ी कम या अधिक, कुछ न कुछ समस्याएं सबके जीवन में हैं।" इस संसार की व्यवस्था ही ऐसी है, कि "यहां जो भी जन्म लेता है, उसके जीवन में समस्याएं तो आती ही हैं।" "अतः समस्याओं को समझना, उनसे संघर्ष करना और उन्हें जीत लेना, यही मनुष्य जीवन है।"

हम देखते हैं, कि "अन्य पशु पक्षी आदि प्राणियों के जीवन में भी बहुत समस्याएं आती हैं। और वे प्राणी भी अपनी अपनी समस्याओं के साथ सदा संघर्ष करते हैं। जो पशु पक्षी आदि प्राणी बुद्धिमत्ता से संघर्ष करते हैं, वे उन समस्याओं को बहुत सीमा तक पार भी कर लेते हैं।"

"जब अन्य पशु पक्षी आदि प्राणी भी इतना पुरुषार्थ करते हैं, और समस्याओं को पार कर जाते हैं, तब मनुष्य तो उनसे बहुत अधिक बुद्धिमान और सुविधा संपन्न है। उसे भी तो अपनी समस्याएं सुलझाने के लिए बुद्धिमत्ता पूर्वक पुरुषार्थ करना

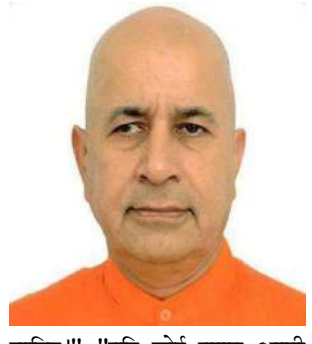

चाहिए!" "यदि कोई मनुष्य अपनी समस्याएं सुलझाने के लिए कोई पुरुषार्थ/परिश्रम नहीं करता, तो उसे तो पशु पक्षियों से भी गया बीता (निम्न स्तर का) समझना चाहिए।"

"आपके जीवन में जब भी कोई समस्या आए, तब पहले तो आप स्वयं उसका समाधान ढूंढें। यथासंभव आपको अपने अंदर से ही उसका समाधान मिल जाएगा।" "यदि न मिले, तो अन्य बुद्धिमान लोगों की सहायता लें। दूसरे बुद्धिमान लोग आपकी समस्या सुलझाने के लिए आपको सुझाव मात्र दे सकते हैं। 'उनके सुझाव के अनुसार परिश्रम करना और अपनी समस्याओं को सुलझा लेना, ' यह तो आपके अपने ही हाथ में है।"

"इसलिए यदि आप समस्याओं से मुक्त होकर आनंदपूर्वक जीवन जीना चाहते हों, तो अवश्य ही दूसरे बुद्धिमान अनुभवी विद्वान परोपकारी लोगों का सहयोग लेवें। उनसे सुझाव लेवें, और उनके सुझाव के अनुसार परिश्रम करके अपनी समस्याओं को सुलझा लेवें।"

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक
निदेशक दर्शन योग
महाविद्यालय रोजड़, गुजरात।

।।ओ३म्।।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200 वीं जन्म जयंती

तथा

आर्य समाज स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में घर-घर सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने का लें संकल्प

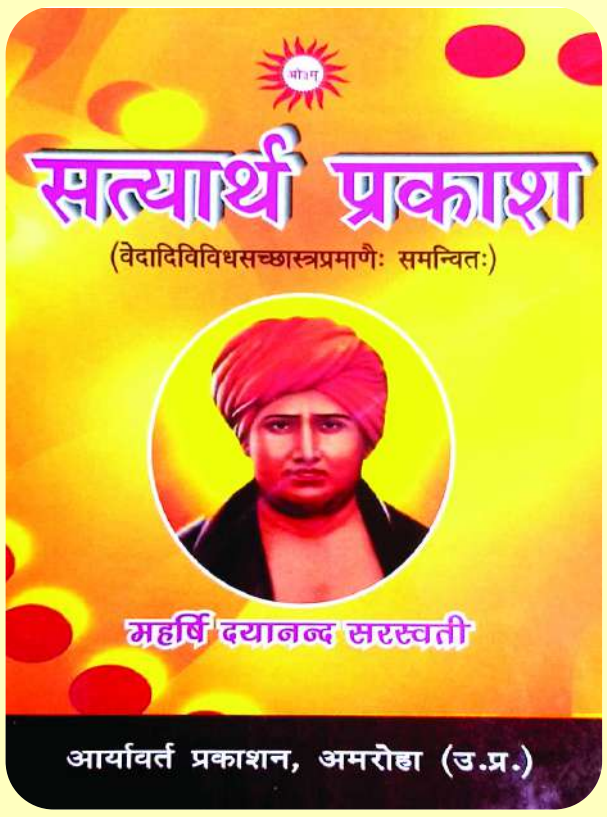

सत्यार्थ प्रकाश प्रेमोपहार के रूप में इसमें प्रकाशित होगा पूरा एक रंगीन पृष्ठ, जिस पर आप अपना, परिवार का अथवा किसी प्रिय जन का चित्र दे सकते हैं।

घर-घर पहुंचाएं ऋषि दयानंद का कालजयी

अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा की सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार की पावन मुहिम से जुड़िए

व्यक्तिगत स्तर पर कम से कम 10 तथा
आर्य समाज व संस्थान के स्तर पर कम से कम 100
सत्यार्थ प्रकाश वितरण का उठाएं बीड़ा

अपने प्रिय आत्मीय जनों की पुण्य स्मृति में अथवा जन्म दिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, आदि जैसे शुभ अवसरों, उत्सवों और अनुष्ठानों के पावन उपलक्ष्य में आज ही

सत्यार्थ प्रकाश पर पाइए भारी छूट

साइज 20X30 / 8 मोटा टाइप, पक्की जिल्द एवं उत्तम कागज

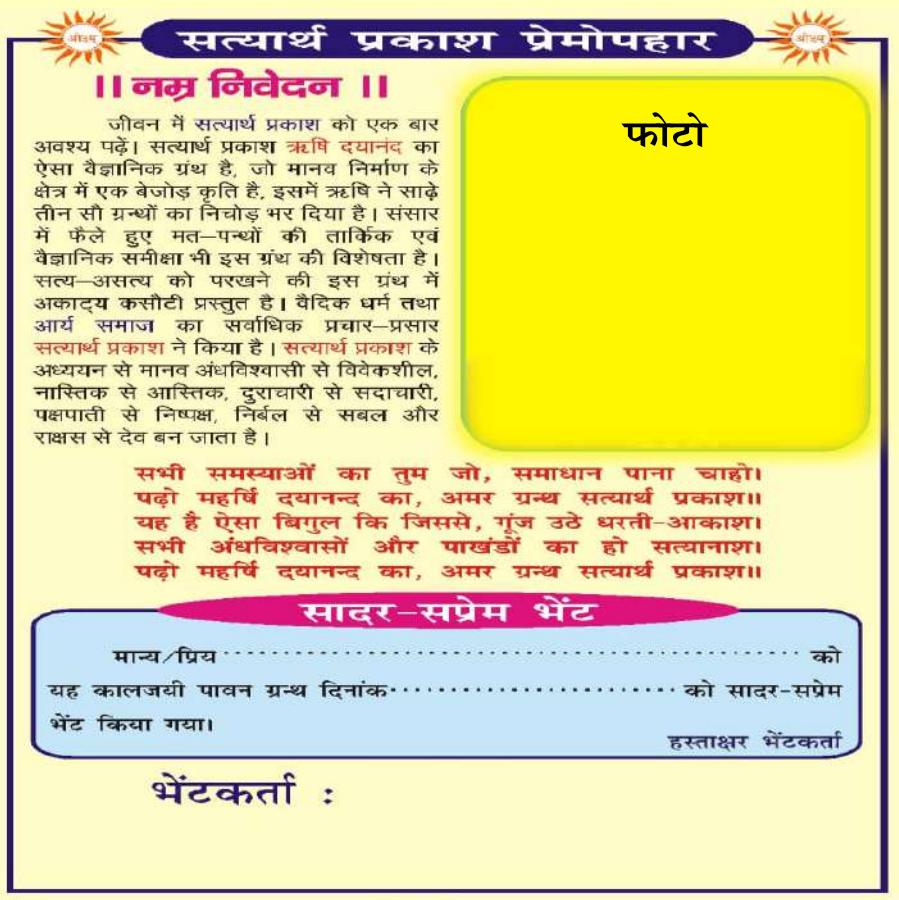

आज ही करें संपर्क : डॉ. अशोक कुमार आर्य
मो.94121 39333, 86308 22099 कार्यालय 87552 68578

॥ ओ३म् ॥

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबूपर्वत

देलवाड़ा, आबूपर्वत, जिला-सिरोही -३०७५०१ (राजस्थान)

३४वाँ वार्षिकोत्सव

दिनांक : 18, 19 एवं 20 मई 2024

आमन्त्रण पत्रिका

गुरुकुल के आगामी वार्षिकोत्सव के कार्यक्रम का विस्तृत विवरण यथा समय आपको सूचित किया जाएगा।

अधिक जानकारी हेतु गुरूकुल के चलभाष 9414589510, 8005940943 पर रात्रि 8 बजे से 9 बजे तक सम्पर्क कर सकते हैं।

- निमन्त्रक -

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबूपर्वत एवं समस्त न्यासीगण

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

सुंदर, सुशील, गृह कार्य मे दक्ष संस्कारित कन्या, कद 5ft. रंग- Fair जन्म-19/02/1991, शिक्षा- M.Com, PG Diploma in Accountancy (with computerized accounts &taxation), लखनऊ मे कार्यरत के लिए समकक्ष, संस्कारित युवक चाहिए। लखनऊ वासी को प्राथमिकता।
सम्पर्क- 9975109603, 9984602766, 8318651664

****

लड़की जन्म 08-04-1988 ऊँचाई, 5'3'' रंग-गोरा श्याम वर्ण, शिक्षा एम.ए. (इंग्लिश) बी.एड. वर्तमान में चन्दा देवी इण्टर कालेज आगरा प्राइवेट स्कूल में पीजटी। मूल निवासी आगरा। गोत्र : कश्यप ब्राह्मण, सौम्य सुशील। सम्पर्क सूत्र : एस.पी. चटर्जी, प्लाट नं0 89, पुष्पांजलि, लक्ष्मी पैलेस, फेज-प्रथम, देवरी रोड बुंदू कत्र आगरा-282001 मो0 9149374841

वधू चाहिए

उत्तर प्रदेश के जनपद बदायूँ निवासी प्रतिष्ठित आर्य परिवार के 27 वर्षीय युवक लम्बाई 5"7" योग्यता बी.एस सी., बी.एड. अच्छी आय , शुद्ध शाकाहारी, संस्कारवान कायस्थ वर्णस्थ युवक हेतु सुशिक्षित, सुन्दर, योग्य, गृहकार्य में दक्ष, संस्कारवान, सुसंस्कृत आर्य परिवार की कन्या चाहिए । आर्य समाजी होने पर जाति बंधन नहीं । संपर्क सूत्र : 9997386782

आर्यावर्त केसरी के प्रसार, विज्ञापन तथा समाचार आदि के सम्बन्धी किसी भी सूचना अथवा शिकायत के लिए कृपया इस नंबर पर सम्पर्क करें-
8755268578
वीरेन्द्र सिंह
प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक

संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक
वीरेन्द्र सिंह
(मोबा. : 8755268578)
साहित्य सम्पादक
डॉ. बीना 'आर्या'
सह सम्पादक :
पं. चन्द्रपाल 'यात्री' डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार, डॉ. ब्रजेश चौहान
टंकण - विकास अग्रवाल/इशरत अली
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य
मो0 9412139333

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य) द्वारा आर्यावर्त प्रिन्टर्स, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0 प्र0) से मुद्रित व कार्यालय आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ0 प्र0) से प्रकाशित एवं प्रसारित। सम्पादक- डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी, मो0- 9412139333
E-mail :
aryawartkesari@gmail.com